

इहर्त्तकियनिष्ठाधनमलुलवाय॥
मृक्षानवकमस्त्रध्वधर्मवैकमृदा॥

युध्ववैज॥

दक्षिण नक्ष॥

यष्टिम यम॥

उरुन विष्ववज॥

अम वरुमा॥

नेमथ धज॥

वायथ खज॥

भीषान वरु॥

वजावलिवस्त्रि॥

वाक्क वरुनसविदिगा॥

अम यथ राअन॥

नेमथ जायमाला॥

वायथ गीगा॥

भीषान यथमाला॥

वाक्क वाधिसत्वविक्त॥

भीषानादि युध्व॥

हांख क्षण यम

अंक्षण गाज

अम्यादि दक्षिण॥

यथमाला हांख

खज यमायनिनत्त धज

नेमथादि यष्टिम॥

दीय क्षण यमायनि वरु

यमायनि नत्त नकाल

वायथादि उरुन॥

युयदह उत्पन

क्षण यमायनि नक्ष

अंक्षणाकवा

वाक्क निडाकलस॥

युध्व अंक्षण॥

दक्षिण याहा॥

यष्टिम दयगा॥

उरुन यष्ट॥

यथनकास्त्र॥

युनादि यमावलि

वजावलि जाल

युध्व वैज॥

दक्षिण यमदष्ट॥

यष्टिम नागा॥

उरुन कलसि॥

अम सुनायाग॥

नेमथ खज॥

वायथ धज॥

भीषान विष्वन॥

कालाननाकक्ष॥

ॐ थाशसर्वइहर्त्तक

यनि हंमधनमलुल

लिखित्वा ० ॥

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ राजा कर्मविधिमाह ॥ आदौ सर्वं मगदिदिवलिथयनयाय ॥ ७ वाय ॥ गुनमधुल ॥ यं व
गर्वसाधन ॥ सिधयक ॥ मधुलथक ॥ किरनक ॥ गिसमाधियाय ॥ कृष्णसर्वं मगविद्विलैयूजा ॥ यधर्मा अकालमव
कियुवदक्षणादवयूजा ॥ सैनीमना धूय ॥ स्नान विधिथंयूजा ॥ यधर्मायादि ॥ ॥ यधनदिदिवलिविय ॥ यनम्वामामनिक
॥ लक्षसदय ॥ स्वस्तिकसगय ॥ गुनमधुलदनक ॥ न्नायदवृत्तियूजायाक ॥ मधुलविसरूना ॥ यननिष्यरुवना ॥ ॥ १
ॐ नमः शिवाय ॥ मानं रावय ॥ रावनस्वां दूतक ॥ यच्छरायविय ॥ ॥ रागाक्षवसर्वगथागगसुगदं नूयं सर्ववाधिसल
नूयं मधुलाथेयनिवृत्तं ॥ मधुलाधियकिजानाक ॥ ॥ याद्यादिजावमन ॥ यं वयुसार्थयूजा ॥ ॥ यनकिग्व ॥ स्वांजाठाडाहा
ऊलयाडाधान्या ॥ ॥ ॐ सर्वगथागगसुवलिगविलासिगमिरनमामिरगवकजः ॥ हं वं हं ॥ ॥ यगिरुक्कसुमाजलिनाथक्षः

समयसत्वं शाल्या ॥ ॥ आचार्यन. वज्र. धृष्टथा नाडा वा दूययाया ॥ वारुगवन अमकं यगिषायवः गत्सकस्य रगवन्
यज्ञादकुरुमदसिः ॥ अथादि सर्ववृद्धाश्च रुयिगसंयगिषिगः नायादवा अथा कृत्वा गदमि सुदिता कृता अर्द्धस्वसगणनाः
थरुत्वा पूषादिकाः ॥ मान्गदान अमकस्यार्थयवाधिसत्त्वप्रविधय. समन्वाहवकुमां वृद्धा जगवका क्रियार्थदाह दहः
वाधिसत्त्वः ॥ जावान्यामकुदवगाः ॥ दवगाला कयाला ॥ धरुगा संवाधिसासिगा. क्षासनाशिनगा सत्वाथकविथा जवश
॥ अमका हंमहावज्रियगिषाविधिसंयुगाः ॥ कनिष्ठा मिजगत्सर्व. अथाह ह्यायवाव गं अमकया मूयादाय. सांहायस्यवग
मः सर्वस्याम्यगिषायसानिधकुरुमदर्थः ॥ ३ ॥ ॥ वज्रगावा. मगरुं नाया ॥ सूक्ष्मायदिगायादिय ॥ मूवायाक अमक ॥
सपवदिकनं निष्कसविनक ॥ ॥ प्रयूयागविय ॥ दिगगाया ॥ स्वकिवाकयनयं धृष्टथासं ॥ मिद्ववगविय ॥ ॥ वा

का ॥ ॐ आः वाक्ष ज दृध क वज वरु स्वाहा ॥ ॐ आः दिव वास स स्वाहा ॥ ॥ धन जा न ग द न स धन क रि वा श्र य ॥
वद सूर्य दिगुद व वा श्र य ॥ ॥ ना सि व का ॐ जिः स्वाहा ॥ धन क रि न क ॥ ॐ आः सर्व ग था ग ग दृ ग म धू पा स न स्वाहा
॥ वा हा सि क ॥ ॐ का य वि षा ध न स्वाहा ॥ ३ ॥ यं वा मृ ग न क ॥ ॥ ॐ आः सर्व ग था ग ग वि का मृ ग धा न य स्वाहा ॥ ॥ यं लां घं ॥
दि ॥ ॐ ग ग द न ॥ क व द्वा य ॥ ग वं क य वि लू जा ॥ ॥ ॐ रि जा न क र्म वि धि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ अथ ना मा क र्म मा हा रा त्र ॥ २
ना स्वां ग य ॥ नि न ॐ न व ज ग वा स ग रं ल य ॥ कु ण लं ल व न हा य ॥ ॥ ॐ आः अ मू क व ज र व र था ग ना म र ह र व स्व णा यं व य हा
वू जा ॥ स र म न्वि य ॥ स्वां दि दि व लि स द्वा क ॥ सि रं नू ॥ स्वां ग न क मं तु र्थि ला ॥ आ णि वा ॥ ॥ ग वं रं धं वि षा य का ॥ द द क्ष
यू जा ॥ जा द क्ष मा ल ॥ ॥ ॐ रि मू वा वू ड या ना मा क र्म वि धि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ अ न प्रा ण न वि धि मा हा रा कु ण स रं

सर्वन	कल	मठ
अग्निं	कुसुम	यिना
सिफिं	नकरुजा	गिसासु

दिदिव७



मठ अविं कुमलुजा न सिफिं न करुजा गिसासु ॥ ॥ सूर्यार्घ्यं गुग्गुलु ॥ यं
 वराहार्घ्यं न सिधुय मलुलथिका ॥ लंखवल्लिद्यय ॥ समाधि ॥ कृष्णसंभवं म
 सिफिं दायरुल कुमालिरुजामयास्यगय ॥ दवयूजा ॥ ॥ आयाधूं निगावाम
 नकरुजा विधिध्वं यूजा ॥ ॥ रंगाय विधिध्वं यूजा ॥ ॥ धर्मोदिकिपूय ॥ ॥ नयव
 जायूजा ॥ ॥ धर्मोदिकिपूय ॥ ॥ धनजकयानां लखस्यदकाय ॥ ॥ स्वस्तिकसंभय
 गुग्गुलुदतक ॥ ॥ मयूजायाक ॥ ॥ समाधवा ॥ ॥ विसर्जनयाक ॥ ॥ धनरावनाखो
 नयसंभय ॥ ॥ शिवात्मनं शावयग ॥ ॥ निनांजन ॥ ॥ गार्ध्वं मठरुल्य ॥ ॥ कृष्णसं
 ह्वनस्नानयाक ॥ ॥ ॥ उं ह्रीं वरुणवदवयदसवजयानिसमर्पिणा वसतिगस्य ॥

माघसिद्धिजलंगलंदिगकलंपनमार्थसिद्धिजलंगलंरुवहुल्लानिकनकवायना वाधनकाद्वरुवियाराडंआःदिववा
 समखादावाडंआःवाधंवाधकवववसुखादावा वाधनकाद्वरुवियाराडंआःदिववा वाधनकाद्वरुवियाराडंआःदिववा
 तद्वरुवियाराडंआःदिववा वाधनकाद्वरुवियाराडंआःदिववा वाधनकाद्वरुवियाराडंआःदिववा वाधनकाद्वरुवियाराडंआःदिववा
 रु विवायनयंघष्ठथास्यंविचक वाडंआःदिववा अविमान वाडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा
 वंजिनयुयननखादावा ममसिआदिनकरुवयाक वाडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा
 नखाद्विकनंमसवृंका वाडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा
 कवजाहवगथागननामरुववखः वाडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा नकाद्वरुवियाराडंआःदिववा

३

दिगल्लस्यं स्वस्तिवाक्क पदयं च ष्ठथास्यं विय ॥ उं सर्वो ह न हारुषा ह स्वादा ॥ का स्वायक ॥ ॥ धनद वरुणा आगं वा द्वा
यक ॥ मूवाया हानन क रूजा था य ना या य ॥ अ धि धान मरुः ॥ ॥ उं न म स म न वृजाना सर्व क था ग गानां ड जा व लं द द
स्वादा ॥ धा व न ॥ ॥ आ गं द्वा स्यं न क ॥ व लानि स्यं धन सा ध्वल नि स्य न क ॥ प्रा ण य स्वादा ॥ धालां ॥ अ य ण य स्वादा ॥ अं गु लां ॥
स मा ना य स्वादा ॥ द धू लां ॥ उं उ द ना य स्वादा ॥ धालां ॥ उं द्या ना य स्वादा ॥ कालां ॥ उं दि व्या य स मा धि ष्ठा न जि न पू रु ठ न स्वादा
॥ ठा प चि न नं का य जि दि का या न क ॥ ना सि क ॥ उं जीः स्वादा ॥ कल शू य ॥ व यू क ॥ ना स ना वि य ॥ सं ध्व ल ध्वं हा य क ॥ उं
स र्व क था ग रू का य वि ष्ठा धन स्वादा ॥ धन न स्वा स्वां माला न का स्वा य क ॥ व रु द्ध ष्ठ था स्यं स्वस्ति वा क या स्यं स्वा न मालां का स्वा यः
क ॥ उं वं ज मू रा न्ध पू य माल स्वादा ॥ स र्वां वि य क ॥ सि हं लू य ॥ य ध र्मा ॥ व रु न अ धि ष्ठा न या य वा क ॥ उं आः सूप कि स्ति न व रु

[illegible]

[illegible]

वसज्जुदउमलनय॥जुदउमलसम्वयश्यालविस्मज्जुदउमकयगांविक्॥स्वस्तिवाक्कयदयंदिगत्वसंस्वकलिविवा
विय॥लाहमासमासकलक॥थननोयारुदाथयूजा॥नूसिधनक॥जुवहामलनसमान॥कललंखनखानकयाया
थससंगय॥यक्कगयविय॥वजनवसुयावथिसंअधिसां॥ ॥उंजाःसूयगिष्ठवजसादा॥ ॥जानाविय॥उंऊं
कांकात्वायक॥ ॥उंजाःधर्मार्द्रा॥ल्यूद्धाद्धविय॥उंवेज्जराखलं॥वानाकमान॥स्वस्तिवाक्कयदयंदिगत्वसंविद्य ५
॥हासिगुतांविद्य॥उंवेजनलगां॥ ॥दसानकवज्जय॥गंकलज्जय॥उंसर्वतथागगानूहागयामि॥यदिगत्वसंवानां
ज्ञानारुसयाय॥पिह्वालह्वसवस्वसंदगवानादय॥ ॥ज्ञयायाथसंगय॥वानाकमांल्यूद्धाद्धलिकाय॥सिरुंनू
य॥ ॥कोमात्रियूजायाय॥मधुलधिल॥आहिवाद॥सखंमाहनिकय॥दंशदक्षणा॥कोमात्रियूजाज्जय॥ ॥सम॥

[illegible]

नवजां कृष्णादिका (६) धूयादिदवता यतसमयसत्त्वज्ञानसत्त्वावादनं शृङ्गकम्पदामरुनपूजाश्रवणम् ॥ ॥
आयाधुनि ययैलौषं मुक्तिवज्रता वामरुत्तय ॥ विविधं पूजा ॥ • ॥ पूज्यन्तास ॥ • ॥ उँ ह्रीं क्लमूनयद्रुं स्वाहा ॥
उँ वज्रपाहा यद्रुं स्वाहा ॥ उँ वज्राणी यद्रुं स्वाहा ॥ उँ ह्रीं यवकवरि यद्रुं स्वाहा ॥ उँ विजयाणी यद्रुं स्वाहा ॥ उँ गङ्गानानि
नद्रुं रुद्र ॥ उँ वज्रविन्दसिनद्रुं रुद्र ॥ उँ वज्रविकिनीनद्रुं रुद्र ॥ उँ ह्रीं गाययद्रुं रुद्र ॥ • ॥ उँ वज्रनाथयद्रुं ॥ उँ वज्र उ
मालगा ॥ उँ वज्रगीगाङ्गी ॥ उँ वज्रनृत्यजः ॥ २ ॥ उँ मैत्रीयसूत्रद्वयस्वाहा ॥ उँ अमाद्यदहीनस्वाहा ॥ उँ
सर्वपायजदसर्वापायवि (६) धनस्वाहा ॥ उँ सर्व (६) कटमादिघातमगद्रुं ॥ उँ गन्धदस्मिन्नद्रुं ॥ उँ सुवंगम
द्रुं ॥ उँ गगहागंजद्रुं ॥ उँ हानकयुद्रुं ॥ ३ ॥ उँ अमृगयुद्रुं ॥ उँ वज्रयुद्रुं ॥ उँ रुद्रयानद्रुं ॥ उँ ह्रीं नवीय

रुद्रं ॥ ४ ॥ उँ वं ऊं रा रुं ॥ उँ अं इ य म रि रुं ॥ उँ य गि रान क रुं ॥ से उँ म न रुं ॥ ५ ॥ उँ वं ऊं य रुं ॥ उँ वं
ऊं धू य रुं ॥ उँ वं ऊं वं ला कि र दी गं च व ड अं ॥ ॥ य ध मा दि ॥ ॥ रि म लु ल यू डा ॥ ॥ अथ अरि नाः
वन ॥ ॥ ल का य ल्वा श य मा ग य अ रु ग दा र्वा खं का स्यं गा द न या य ॥ म रु ॥ उँ वं अ म न य रुं खा रु ॥ ॥ व न १०
६ ॥ ॥ दि वं रा रु मू क स्य ना म धू यि उँ स व या य रु न २ व ड रुं रु ॥ उँ स व या य रुं वि (६) ध न रुं रु ॥ उँ वं ऊं रुं
रु ॥ ॥ उँ ॥ स व क मा व न ड र सिं क रुं रु ॥ उँ ॥ वि (६) ध न रुं ना स या व न धा नि रुं रु ॥ उँ ॥ वि (६) ध
या व न धा नि रुं रु ॥ उँ ॥ ऊ व २ ध व २ रु न २ आ व न धा नि रुं रु ॥ उँ ॥ स न २ य स न आ व न धा नि रुं रु ॥ उँ ॥
॥ स वी व न धा नि रुं रु ॥ उँ ॥ स वी व न धा नि रुं रु ॥ उँ ॥ स वी व न धा नि रुं रु ॥ उँ ॥ स वी व न धा नि रुं रु ॥

[illegible]

इत्यादा ॥ दृष्ट्वा उदं कनिश्चावनिश्चिन्तावनिश्चिन्तितु नृन २ सर्वकर्मयन्त्रेणादि X स्वधार्द्रं ॥ १० यं वाग ॥ उ
अभाषां यतिदुर्गद्व २ सर्वो वनन विष्णु सतिद्व २ X आवननानिद्रं दृष्ट्वा ॥ यं वगन्ध ॥ उदं नत्त २ मदावत्तनत्त सक्त
वनत्तमाना विष्णुधय X सदाय विष्णुधनद्रं दृष्ट्वा ॥ गूढा नागय ॥ उदं जमृग २ जमृगा रुवजमृग संरुवजमृग विष्णो
गजामिन X सर्वकृष्णयंकाने स्वधार्द्रं ॥ न स्वा विदं गय ॥ उदं यन्ध २ मदाय यन्ध जय विमिग यन्ध जय विमिग यन्ध
ध्वान संरात्राय विष्णु X स्वधार्द्रं ॥ ध्वान्तराय ॥ उदं यन्ध २ मदाय यन्ध यन्ध र्ध्व X सदावत्यां गद्वन्तु स्वधार्द्रं ॥ राय
दादा स्वानलं वगय ॥ ० ॥ धन जमृग यन्ध यन्ध यन्ध यन्ध ॥ ० ॥ जमृग सदावत्यां गद्वन्तु यन्ध ॥ दादा ॥ उदं यन्ध यन्ध यन्ध
लायक नया नन जलावी सूनूय निद्रं गानस्य सत्ययिता सूनूय निद्रं गानस्य सूनूय निद्रं गानस्य सूनूय निद्रं गानस्य सूनूय निद्रं गानस्य

१ सना

वनसुवर्णवर्णधर्मवकसूत्राः ददीयमानं यश्च वडां कृष्णादिनां हानसत्त्वमावाहनं विहायः ॥ राघुयनिला
 जनवदनामरा रुं गायशासनां ॥ यत्संगलसूत्रमसत्त्वद्वगं न गत्य वृद्धवृद्धस्य दाववदातस्य विवृद्धवृद्धेयस्य गसं
 गनू विवस्य गत्संगलं रवंतु गयनमारुधकेः ॥ यत्संगलं सूत्रनमाः सूत्रयुक्तिरस्य सधर्मस्य गनकाथिरस्य जनरुव
 सुलाकरययनिदिगस्य निनात्मकगवरेवकु गयमारुधके ॥ यत्संगलं सुवत्रधर्मवस्य नित्यं सत्त्वनिकस्य जिनबंध ८
 वनस्य नित्यं सत्त्वयकावदिरस्य ससंगलं रवंतु यनमारुधके ॥ विधिर्थां जूष्णि पूजा ॥ यच्चन्यास ॥ उं मू
 नश्महात्मनय स्वाहा ॥ उं हं य मूनय स्वाहा ॥ उं वै ऊ वा दय स्वाहा ॥ उं वै ऊ वा ह्य स्वाहा ॥ उं हं त्वचक वारु न हं स्वा
 हा ॥ उं वै त्वा ह्य व हं स्वाहा ॥ उं ये मा ह्य व हं स्वाहा ॥ उं वि (हं) व हं स्वाहा ॥ उं वै ऊ वा ह्य व हं स्वाहा ॥ उं वै ऊ वा ह्य व हं

स्वादा ॥ उं दशाक्षी यद्स्वादा ॥ उं वेङ्गविदि विनद्स्वादा ॥ उं ह्रीं गायत्री यद्स्वादा ॥ उं लोभ्या यद्स्वादा ॥ उं मालायत्री
स्वादा ॥ उं गौरी गायत्री यद्स्वादा ॥ उं नेत्राय यद्स्वादा ॥ उं मेरा स्तलनाय यद्स्वादा ॥ उं जम्भा घटि (दा) यद्स्वादा ॥ उं सर्वपा
पक्ष ह सर्वपाप विह्वली यद्स्वादा ॥ उं सर्व (दा) कर्म मानि घातमग्नं यद्स्वादा ॥ उं गन्धदक्षिण यद्स्वादा ॥ उं सर्वगम्य
स्वादा ॥ उं गौरी गायत्री यद्स्वादा ॥ उं ह्रीं नमो यद्स्वादा ॥ उं जम्भा यद्स्वादा ॥ उं वेङ्गवन्द्य यद्स्वादा ॥ उं
रुद्रयात्र यद्स्वादा ॥ उं ह्रीं लीनय यद्स्वादा ॥ उं वेङ्ग गायत्री यद्स्वादा ॥ उं जम्भा यद्स्वादा ॥ उं वेङ्ग गायत्री
यद्स्वादा ॥ उं समस्त रुद्र यद्स्वादा ॥ उं वेङ्ग यद्स्वादा ॥ उं वेङ्ग यद्स्वादा ॥ उं वेङ्ग यद्स्वादा ॥ उं वेङ्ग यद्स्वादा ॥ उं वे
ङ्ग यद्स्वादा ॥ उं वेङ्ग यद्स्वादा ॥ ॥ यं लोभं दुःखं ॥ ॥ उं विष्णु सर्वसं कल्याण वा राव विवर्जितं ॥ ॥ कृष्णसिंह नमः

स्यामिहुं यकृतिनिर्मलं॥ येनो ॥ उं हं ॥ नमनयद्रुं ॥ धन ॥ १०६ ॥ यधर्माज्जुकावमूकियव ॥ ॥
वलिवियदिविचिंयूजा ॥ ॥ मधुधिलस्वांगन ॥ मुनि ॥ उं नमस्तः ॥ ॥ अस्मिंदायधर्मवक्यवर्कः ॥ ॥
कुंजगत्सर्वे ॥ ॥ धयसर्वेदुर्गे ॥ ॥ १ ॥ नमस्तवजाश्रीयायधर्मधुस्वरावगः ॥ सर्वसत्त्वदिगाथाय ॥ आत्मन
त्वयदहाकः ॥ २ ॥ नमस्तवलायायसमनगस्वरावनेः ॥ ॥ धुक्स्मिं सर्वसत्त्वदिगाथाय ॥ ३ ॥ नमस्तव
साश्रीयायस्वरावयत्तयायटः ॥ ॥ अस्मिंदायधर्मधुस्वरावनेः ॥ ४ ॥ नमस्तवविष्वाश्रीयायस्वरावयत्त
समनस्मिं ॥ ॥ विष्वाकसेकनोक्षयांसत्त्वानां ॥ ५ ॥ नमस्तवजाश्रीयायधर्मधुस्वरावनेः ॥ सर्व
सत्त्वदयाय ॥ ६ ॥ नमस्तवजाश्रीयायचिन्तामणिधुस्वरावनेः ॥ ७ ॥ नमस्तवजाश्रीयायचिन्तामणिधुस्वरावनेः ॥ ८ ॥

[illegible]

मधुलविस्मृतन॥सर्वंयथा॥चक्रयूजा॥दक्षिणा॥विष्णु॥निसना॥दगुष्टसमयका॥क॥हना॥कन॥

॥सिद्धिप्रद॥विधि॥ ॥ ॥संक्षयप्रतिष्ठाविधिमाह॥गुणमधुल॥यं

गवा॥सिद्धिर्लभ्य॥समाधि॥सर्वं॥मत्॥थापिन॥सरावाता॥धूपनिर्वाजन॥विधिश्च॥यूजा॥दवयूजा॥

३१ शिवनाम्नां॥ ॥आ॥या॥धू॥नि॥यू॥पै॥ला॥घै॥कु॥ति॥ग॥त्यन॥ ॥ऊ॥रु॥क॥मे॥द॥व॥ग॥न॥स्व॥स्यं॥७०

ह्य॥आ॥वा॥र्य॥स॥मू॥र्य॥ ॥ ॥म॥द॥नू॥नि॥म्य॥न॥द॥व॥ग॥मू॥ग॥रू॥य॥य॥य॥गि॥सा॥या॥य॥॥द॥व॥द्व॥व॥नः॥

आ॥वा॥र्य॥वा॥हा॥व॥ ॥शिवता॥ ॥ग॥ग॥(६॥सर्व॥ग॥था॥ग॥स॥द॥सु॥नू॥यं॥सर्व॥वा॥धि॥स॥त्त॥नू॥यं॥म॥धु॥ला॥य॥य॥

नि॥वृ॥नं॥म॥धु॥ला॥धि॥य॥गि॥मा॥ला॥कः॥ ॥या॥या॥र्घो॥दि॥ ॥यं॥वा॥य॥वा॥यू॥जा॥ ॥स्वा॥न॥क॥ना॥उ॥ऊ॥आ॥मा॥नं॥दा॥

ऊनयं वान ॥ ३॥ सर्वगथागतसुनलितविलासतमिगनमासिरुगवकजः द्वैर्वंदाः ॥ युगिष्टकसु
मांजलिनाथदाः समयस्व ॥ थुगियदयावस्वानयालदात्र ॥ ऊजमानऊऊयनिंव्या. त्वउय
निथकायाखांदायोऊनय ॥ आचार्यध्वथास्यंधूययाय. वाक्क. ॥ ॥ ३॥ रंगवनमूमकसः
वेविद्यानाऊनभासुगकगुमिष्टामिगनाथप्रगिष्ठाकनूक्षत्मकं. सिथानामनूकयाय. यूषाकंप्रः
गिष्ठायवः गन्मरकस्य. रंगवनप्रक्षदकगु. नदसिः ऊथादिसर्ववृद्धाश्च. गुयिगसंयगिष्ठा
भासादयाऊथाककोगदहिसुदिदाकरीः ॥ मृगखलगतं नाथं रुत्वायूषादिकाः सांगदान
नूकस्याथाय. वाधिसत्वपद्वय. समन्वादनकुमांवृद्धाऊगवकक्रियार्थदा. रुदरुवाधिसत्वा

ॐ
५

अ. यावान्नाममुदवताः ॥ दवगालाकयालाश्चरुगासंवाधिमासिगा. ६॥ सनाशिनगासत्वा. यकविह
ऊचक्षुषः ॥ अमृकाः ३ दंमसावजियुगिषाविधिर्संयूताः ॥ कविष्यामिऊगत्सूक्ष्म. यथाहाकयुवावगः ॥
अमृकयामूयादायसहिष्यस्यवगत्सः ॥ सर्वस्याम्युगिषाया. सानिध्वंकलुमदर्थः ॥ ३ ॥ खयनवान
॥ ॥ अथमसरुवंकुमं सरुलंजिविगंवमसमयंसर्वदवानांरुविगादंनसंसयः ॥ अथे ॥ ११
वर्कुरविष्यामि. वाधिविरुक्कवगत्सः ॥ गथागगः ॥ कुलात्यगिमसायस्यानसंसयः ॥ अथममवि
वसादयय. हामदयनूरुनं ॥ सन्नियारुवकय. सर्ववृद्धनिमकुताथः ॥ गददीजनहमकीषाक
एषानदवगामाकयः ॥ याथादि ॥ निर्माजन ॥ ५ ॥ विम्वप्रवहायग ॥ दवविम्वनपिहाउ

डाहुंहादय ॥ सिध. गव. ॥ मू. न. डं. द्य. य. क. ॥ ॥ अथ नखां कृष्णं ह्ययं चामृ. यक्षगव्यस्यंद
 वयाक सनात ॥ ॥ उत्तमंगलं सकलसत्त्व. दिगन्तस्य वृद्धस्य दाह्यदिगस्य विद्धवृद्धेः ॥ यः
 मंगलं विवस्य विराताकस्य. गत्तमंगलं रुवंतु गयनमारिषक ॥ ॥ अथ नखां काया उनात्रिः
 ददनयाय ॥ स्वस्ति वाक् ॥ दनं स्ना ॥ उत्तमंगलं सुवनना सुनयूकस्य. धर्मस्य न. न. कथितस्य. नि
 नूत्नस्य. लाकुरयं युनिविगस्य निनामकसा गत्तमंगलं रुवंतु. गयनमारिषकः ॥ अथादिजागमाय
 नत्यादि ॥ ॥ नूयूवस्तु विय ॥ ॥ अं. आः. वा. ध. ग. दृ. ध. क. व. व. व. क. स्वादा ॥ ॥ नू. वां. द्य. क. ॥ अथ नखा
 गा. लिव. रु. ग. आदिन. कुरुं वयाय नार्थदका. किदाव. उादाव. द्याक. रुष्टिसनसंदादावय ॥ ॥

उँआः दिवावासस्य स्वादा ॥ उँआः गिलकयुवनस्वादा ॥ (गमन वनं गिक ॥ आया धूं नि. यू. यं लाघं
 दुति ॥ ॥ उँव जांकु ॥ उँव जांकु ॥ उँव जांकु ॥ उँव जांकु ॥ उँव जांकु ॥ मूजकास्यं घष्ठ
 थास्यं हतक्षत्र ॥ ॥ धनवजं धिसंविज्यास ॥ उँव सुपात्र ॥ आ कथूस ॥ हू नूगत्र ॥ क्षोमिवा २
 उँ. क्रसयं २ ॥ ह्वे. क्रस ॥ गं. क्रु ॥ स्कं. कयात्र ॥ सें. खरू ॥ धगि वीजा दलन अधिष्ठान ॥ ॥ धन. ७२
 विरकात्रिहसू पू. अंकलमला कायल उल्ला य ॥ उल्ला यगि ह्वनास. मास सें निस. धलकस्ति नद्राया
 उ ॥ मकात्र. टकात्र. अक्षत्र नजागश्व. सूर्य वदुलं. उडा त्वडा मिहवास अंकलन उत्र ॥ विरकालिन
 मिहवाकं ॥ सनाका काया उदवयाक उत्र ॥ ॥ अहान अंधकाल वदुयं. पगि रजिन कवः ॥

कावेयनाजंयथालाकस्यनेमिनां॥ मनु ॥ उं वक्षुश्चसमनुवक्षुवि॥ (अधनखाहा ॥ अऊनंउन॥
उंदिद्यवक्षुध्वहं॥ मिह्वानिध्वंउन॥ ॥ उं धर्मवक्षुध्वहं॥ उं हानवक्षुध्वहं॥ कसकः
कन ॥ उं यक्षवक्षुध्वहं॥ उं वज्रवक्षुध्वहं॥ वज्रवक्षुध्वहं॥ उं आः हानवक्षुहानवक्षुः
कनूश्चहं॥ यक्षहानवक्षुअधिवानइयू॥ (अक ॥ गणः शिष्यागांसर्वसत्ताश्चविलाः
कायकयामयः विंदसादादयास्तद्वक्षु॥ अकसिंदनवीक्षगाः॥ गायोविनिर्गलस्मिनिःस
र्वदि॥ (अकधागुस्तन॥ सर्वसत्ताः दिद्यवक्षुषिवियाकृत्यगस्मिन्नवसयग॥ ॥ आदा
द्यावनययगं॥ वि॥ पा॥ वा॥ क॥ दाय॥ ॥ थूनिदिष्टिदानविधि॥ ॥ गणः अह्वयपादो

अ
ति

विनिधाय च मधूनायासयन् ॥ ५ ॥ वाक् ॥ ॐ नमः सर्वगथागतः मधूनासनस्वादा ॥ धनक
सिनक ॥ ॐ नमः सर्वगथागतविकामधूनास्वादा ॥ दूदत्वंक ॥ यं लोचं गुणि ॥ वज्रं कृष्णदिग्द
॥ ६ ॥ वाक् ॥ ॥ ॐ नमः सर्वगथागतविकामधूनास्वादा ॥ धनक ॥ ॐ नमः सर्वगथागतविकामधूनास्वादा ॥
नामाकनं विरायः यदीयाद्विभक्तं वरदस्मिन्नासर्वोकाधधुपत्रिपूर्वविरायः ॥ यूननागः १३
त्यः स्वददयानामाक्षनं सक्तुविश्वर्यदवताददयः यवलय ॥ गथे वरुलनादिकं कृत्वा ॥
॥ धनक ॥ वाक् ॥ यथाददयसक्तुडादवयानामावेक्षेणार्थ ॥ मगयाकिनडा ॥ ॐ नमः सर्वगथागतविकामधूनास्वादा ॥
अददयनयादाडायाडादवयाकद्विगणनय ॥ ॥ नमः सर्वगथागतविकामधूनास्वादा ॥ ॥ ॐ नमः सर्वगथागतविकामधूनास्वादा ॥ धर्म

धनयं वामृगं यं वामृगं कर्कतं स ॐ वा ३३ कर्कतं वनस्त्रां ॥ वा ३३ ललाटादि ॥ वा ३३ धननखा
चिकन दाहास्त्रां सिद्धवानदाय ॥ वा ३३ ॥ ॐ सर्वे तथामृगकायविष्णुधनखादा ॥ ॥
धनयं व वल्लव न ॐ न स्त्रानयाय ॥ वा ३३ ॥ यः सत्त्वमलव न धर्मवकी मृगांग (६) सदीनस्य
दियस्य वेवावनस्य रवदूः ध्वविनाक्षकस्य तमंगलं रवंगुष्म किंकलं रवाय ॥ कसकं कन
वा ३३ ॥ ॐ वरु सत्त्व ॥ ॥ गालुचं विगनयवगिदक ॥ वा ३३ ॥ ॐ आः गिलकरु वनखा
दा ॥ धनयवया दूनामरुल उगुनामरुय यवयानूगव सवजन थियकं गय ॥ आवाय्यन
धान १० ६ यवया दूमरु रुल उमरु जाययाय ॥ धनयं ला घं रुकि ॥ ॥ ॐ गितास

कर्तुविधिः॥ ॥ धनसावना ॥ ॐ आकाशधरुर्वगर्ह्यं यथा गतं ददताथे गच्छ वृद्धनरु
 त कथयति सवेत्युक्तं सखद्वृद्धसदानुक्रम्य ॥ पुनर्वित्तं (अथ विकल्पं यच्छेन अतिविः
 ध्वरुवविद्युर्गुरुलकिरासयमनावधार्यमयवज्जलाकनकीवसावम ॥ ॥ धनमूत्र
 ॐ सामूत्रं क्रसयं घातन ॥ मरु ॥ ॐ कर्तुविवलायनायति स्फुटयश्चं स्वाहा ॥ ॥ धन १४
 ऊकाक्रिया ॥ स्नानयाय ॥ श्रीवज्रवदवत्रयदसवज्जयानिसमूर्तिगाम्भसदिगस्यः अनासिद्धि
 ऊसंगलं हिरकनं यत्रमार्थसिद्धिः तसंगनं रवतु ॥ अतिकनं गवायः ॥ ॥ ऊउं वसुवि
 य ॥ ॥ ॐ दिव्यवासस्य स्वाहा ॥ ॐ वाष्पं गच्छ कवचवस्त्रस्वाहा ॥ ॥ वज्रगावा मट रुं लः

ॐ
 क

या ॥ नानासिंहादल पंचपक ॥ नरवर्ध्याथ वरसमस्यं दिगगाद्य लखंदाय ॥ ॐ उग्रः स्वाहा ॥
भासिक ॥ पूषादियूजायुति ॥ ॥ ॐ गिरुलपासनविधि ॥ ॥ ॐ वरुणास्वानयाकयूजायुति ॥
॥ स्वतिवाक्ययत्रय पतिवत दिगगास्यं विरयक ॥ ॥ ॐ सागिरवन्ता ॥ नानाआरुनविद्यजावाक्य
यविय ॥ ॥ ॐ सर्वारुनरुखनखाहा ॥ गिरांगिक ॥ ॥ ॐ नृप ॥ ॐ नकरुजाकल ॥ ॐ दजिनः
स्यं नानाव्यंजननयाडाहाहावय ॥ ॥ ॐ नमः समकवृद्धानां सर्वगथागानां डाजावनंद
यखाहा ॥ ॐ नमाखाहा ॥ ॐ उग्रः हं ॥ धानाअधिष्ठान ॥ ॥ ॐ अंगं यक ॥ ॥ ॐ यानायखाहा
॥ ॐ यानायखाहा ॥ ॐ यानायखाहा ॥ ॐ यानायखाहा ॥ ॐ दिव्यानायखाहा ॥ ॐ दिव्यानसमाधिः

ध्यानविनयनस्वादा ॥ दायविनयनं कायानक ॥ उं श्रीः स्वादा ॥ वाकनवशाय ॥ रानस्वाकस्वान
 मानं कास्वाक ॥ मूखसिद्धि ॥ स्वय. स्वानविय ॥ ॥ कथस्वाय ॥ अउनं विय. चगासाधिम्रादि
 गयाउवा ॥ दायक ॥ ॥ पूषादियूजा ॥ यं ला. घं. पुकि. ॥ ॥ किञ्चनयासनविधि ॥
 ॥ ॥ धनरावना ॥ उं महासूखवज्जः ॥ वः साः सूत्रगलं महयिगि ॥ सर्वगथगलकि ॥ १५
 दनदासदगनकायय ॥ ॥ ऊजमानं साऊनयंगयक ॥ उं महासूखमहावागसिवंसर्वऊगय
 तिसर्वसुखमना ॥ यिसर्वसुखददिसिग. सर्वसुखयिगाथेव. कामागधः समयादिनां सुखानां न
 नमनाथं. कामासुखं पत्रियूत्रय ॥ धमेधुवधिधानासमयस्मननायदिद्वययासर्वसुखानां. कः

[illegible]

~~महानिहय आदि समय काय मधुलथिल विसङ्गन जिसमाधि कल हाग्वं मट मकूट मामकियूजा~~

महानिहय आदि समय काय मधुलथिल विसङ्गन जिसमाधि कल हाग्वं मट मकूट मामकियूजा

॥यवयूजा॥आ.पा.धूं.नि.पू.यं.ला.घं.गुति.यधर्मा.अकानम.कियूव॥ ॥थनधर्मनियनिदग

थानाडाहय॥थजिकथनतय गुनूगलुलदनकं.मटपूजा.हिष्याधिवसन.यं वगद्यविय.वत्तम

लुलवाय.गुनूयासुदाहनय॥गुनूयायादयूजा.अर्चयाय॥ ॥हिष्यजनि.ऊजायूलिचया.ह्वडा

पुलिथकाया.हाजलपंधान॥अध्वचना॥वाधिवज्जवूजानां.यथादरुमहामह.समायिगात्रवार्था

यध्वजददादिम॥ य ॥हनाथहगुनू.ठलयालयायादया.पसादयाकं.लानांलायमजियावांगुथ

थिंगुमहावजयंवाहिषक.जिमिगविशविष्क.इन॥थ.अरुषक.ग.थ.ह.ह.वान्धानसा.वूवयनि

~~महानिहय आदि समय काय मधुलथिल विसङ्गन जिसमाधि कल हाग्वं मट मकूट मामकियूजा~~

महानिहय आदि समय काय मधुलथिल विसङ्गन जिसमाधि कल हाग्वं मट मकूट मामकियूजा

सजिब हवउ सवउ बायाउ प्रहद हव मायमी बउ हव विद्याना बांउ उगुहयम सलाम खलयाउ गुन ४

सकस्यां वाधिहानया गुर्वजं अधिमानया नागया गु. जूहं तं गडाधनावानगु. आकाशाथेन धाम

दयावाग्, वरुथं दुःखं दुःखसिद्धिवाचं, संसारयागुद्ः खगनशयकनिर्मितनथथिं, अशियः

कठिणनिरुविशदिव्याह्नधकगुनूयाकपाथनाया॥ ॥रावना॥ ॥तमानजसादिद्विगाय

दलकमवायुविद्युत्सूर्योदयविष्णुषसत्यलीकं वरुनैवृषांदिशाकां ॥ १॥ आ. या. नि. आ. हा. ग्नि. न. क.

ॐ ॥ शिवाय धिमान् ॥ ल ॥ गदनखद्विजमयैवानीगादिग्वहिनस्तथागताविद्यादवीक्षसंपू

श्री श्री गणेशाय नमः । वृद्धानामेति शिष्यकं गुजरातनाय त्रिजिह्वागुणावकाशाय धादुरुताया दधनसोहि

॥ सनातनगुणप्रथितगुणकलसयाज्जगत्प्रथमकवि सावित्राय नमः ॥ १ ॥

हि कायवाक्यिह स्वस्वकाहायवदश्रयादिगत्समथागमवानाशवांगूअधिगुअथमसलानाअसंयुक्ता

अ
३

वि. कोलाक याना यक शस अवि का क म यो धा क सिंदर रा दानं र सां अथिं गु य हा या न मि ता नू य रु यारं
सम सं वृद्ध य नि स न अ वि चान याना ग या गु सं सा न हो ग न रु य गु गु धा क न धा या म् अ वा र्यं ग (थ वि
ल (अ थं डि य नि ग वि स वि का य मा ल ध क गु नू या क पा थ ना या ना ॥ २ रा व ना ॥ ॥ गो रु था ग मेः य हा
स मा य नो हा ना (ग न प वी रु यः वे वा व न धा न धा क नि वि ध्व व ज सा (गो हा नि गो र्थ त द वे द वी म् व न य व
हि गं हि थं म टि मि लू न् य गान क नं हं व ज जा ग स प हा आ र्थ नू यं हू न स ता रि न म रि थि व यून रू रु म् १०
ह्वा दि रिः य मा निः रु ग ग ग न मा यू र्थे सि मे ला व ना दि वि था स दि मे रु ध ध ज य ना का व रु वा दि ग गीः
ग नू य यू थ कं क मा दि रु छि रिः क न कि स न या व जि व धा धि वि ला मृ ग पू र्णे सि ग क ल (हो रं हि थं
य मा नि रु ग म रि थि व मा न नू य व जा प वी रिः हि थं गु द रु टि क रं का हा नि र्म लं धा ता ॥ ॥ हि थ
शं गु गु र्थ गं जा रु ल् य मा न रु द वां गु सं सा न न न रु य गु वे वा न या वा न अ न गु य वी या म् रुं य व हा रु २०

[illegible]

यादया

अथिगु वडं अथिगु नाना नया गुमहा सुखला यगु हान नान गु अथिगु ललित वडं अथिगु कला यगु २
 दीज नाना यानी नान नान सत्त्व कीरु नंद दू संयुक्त गगन विहग नन सच वन गही नवा धि विहग मृग नय दस
 यन वडांगु लिल लिल नन गत्त्व राव वडं ॥ ॥ ५ ॥ मदा सुख वडं सत्त्व मरिध कटात्वा मरिधि अमि सर्वे
 थाग गाधिय त्वन दृष्टार व ॥ त्वकन ॥ ॥ १ ॥ अथिगु कसदा वडं गे धा गु कं नमस्कृतं ॥ ददा मि सर्व वडं नां नि
 गु काल य संरा वं ॥ य ॥ ॥ १ ॥ दसीध ॥ ॥ १ ॥ अथिगु कसदा वडं गे धा गु कं नमस्कृतं ॥ ददा मि सर्व वडं नां नि
 नाय नि स कस्य नं नमस्कृतं दान या गु सगत्त्व वडं य नि सं गु लिल गु कया दृष्टया वांगु धि धि ठ गु या गु द
 अथिगु क वि स विर्या य माल ध क गु नू या प्रार्थना या ना ॥ ॥ ॥ ५ ॥ अथिगु क वि स विर्या य माल ध क गु नू या प्रार्थना या ना ॥ ॥ ५ ॥
 ॥ १ ॥ अथिगु क वि स विर्या य माल ध क गु नू या प्रार्थना या ना ॥ ॥ १ ॥ अथिगु क वि स विर्या य माल ध क गु नू या प्रार्थना या ना ॥ ॥ १ ॥
 पं. ला. घं. स्तुति. ग. र्पन ॥ ॥ १ ॥ अथिगु क वि स विर्या य माल ध क गु नू या प्रार्थना या ना ॥ ॥ १ ॥ अथिगु क वि स विर्या य माल ध क गु नू या प्रार्थना या ना ॥ ॥ १ ॥

52

76



3

नलसंख्ययां गुह्या वांगु अथिगुसर्वधुया नूय रुया वांगु सफ नलसंयुक्त रुगु नलका नलं (६) लाय
कंदसिमेक नूला काक वजसत्व गुला धयं ॥ ४ ॥ वाहनाथ रुद्धलयाल अगिक नूला वक स्वगु विधुवन
यका व रुयां वांगु वजसत्व गथा गगया रु रुया वांगु मकूटा रिषक जिय निरु विस विद्या यमाल ॥
॥ रावना ॥ ओं का वजं नलसंख्य वनू यिनं हान सत्व न की रुगं न रुगु गथा गगय दवी रिः कं रु न रि
विधु मां नूय वजा दिरि नूय मानी यमान मंगल गी रिकं रु वयं ॥ ॥ गगः कलक वरु दिद्य टिगं
नलसंख्यं मकूटं गत्त राव वजं हान सत्व नूयं यक्क गथा गग मध्व विग विद्य कुल (६) न धि विमं गस्य
हिल मध्य लला गस मा वाय ॥ हिल सयूक्त ॥ यू. द. य. उ. दि ४ स्वक ॥ वाच ॥ ५ वं वज धा ग व
विधि ३ रुं ॥ ५ सत्व वजी अरि विधु जी ॥ ५ नल वजि अरि विधु जी ॥ ५ वं वज धा ग व
नान रुया वांगु यं व वृद्धि यि स्य न मान याना रु गु अथिगु मकूटा जिगिल यला गका धक रु लया या गु नू ॥

मकुटासीषक इत्यादिगु दक नथा नया नूजम विरुया विज्ञानावांगु अथिगु मकुटासिषकलानरा २
मवजिअरिषिअमू॥ ॐ दक सर्ववृद्धानां गुधायुक्तं नमस्कृतं यथाकं पूजनाथं यमकुटयं वकुना
हवः॥ ॐ सर्ववृद्धवृजाम विमलामकुटयमिच्छताः॥ ॐ अरिषकल्यादि ॥ ॐ अ॥ वज्रमकुटासिषिच
हंसवगस्यमहं॥ ॥ धर्मियदयंयुयक ॥ सि ॥ यच्छानवरावात्वादिमवज्रयनंममअविद्या
यननिरोधहानयाफारवाम्यहं॥ य ॥ हनाथ X धवाताहानं उत्पतिरुयावाहुवज्रयावक
जियनिअहानरुगक कडाधनहानलायनिमिलिन वज्रयाअरिषकजिमिगविशविद्यायमा
ल ॥ ॐ ॥ रावना ॥ ॥ मगिगिजीः यमयनिजगंअमिगारवूर्य हानसत्वारिन्नक्षिणं वज्रं वा
मिताहात्मकं विविंश ॥ ॥ अरिषकं नित्यादि ॥ अद्यारिषिकल्लमसिवृद्धं वज्रासिषकगः ॐ
अथिगु यथायनिअथमस्थानाअमिगारयावूर्ययाअ वज्रयाअरिषकलानरासुवाअगुवयाम

ॐ
ॐ

१२

* खलानां वक्रगिनां मत्तं हर्षमानं रुयां वक्रघृष्टं जालिङ्गं मूजकयां गुन्यामपार्थनाया धकं ३॥
 दकलं वक्रवृत्तं गृह्णवक्रसुसिद्धय ॥ धर्मिवाक्यासं कथूकया नृगं धिग्वं लङ्काय ॥
 ॥ अरिषकयादि ॥ उर्वकाधियमित्वा यमरियि अमि गि वक्रसमयत्वं समयदाः ॥ उर्वकघृष्ट
 अः अः ॥ ४ ॥ X २ यल्लयात्रमिगानूयं घृष्टं वंददस्वभं यनयाफनसर्वगथाग्यः स्यामदह्मं ॥
 ॥ ५ ॥ ॥ इनाथ X यल्लयात्रमिगास्वदूय रुयां वांगु घृष्टया अरिषक डि मित वि स वि का य माल ॥ ६ ॥
 यानि मिलिन धालसा थाग्य शक्ति सत्त्वया हिय निदिता या य नि मिलिन घृष्टया अरिषक डि यानि
 रुविश वि यो य माल ॥ ॥ रावना ॥ ॥ ध्वं ध्वं ज्ञा भा घ सिद्धि नूयं हान सत्त्वा रि नं घृष्टं व मा य सि
 य नि हा ना वि रा व यत् ॥ ॥ गृहिणा इति मया र ग व न्नयि स नि दि ना रु वः ॥ ॥ धर्मिय द य
 अर्थिं मूमा घ सिद्धि नूय रुयां गता धन हान गान गु अर्थिं गु घृष्टया अरिषक कलान राल यां गु

पंचराशचननिकवाक उं हं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ३३३

वष्टनकथकया नूनाथियकं ह्वजनादातिंधाका ॥ रावना वाडं चकंदेनाचननूयं ह्वनसलेकवसं वि
रायः ॥ ॥ अरिषकलादि ॥ ॥ वज्र घण्टाकासं हिल क० नूनाथियकं जालिं गधमूद्राकायकं न

उल्ला यं ॥ ॥ घण्टा समयविय ॥ ५ ॥ मनुष्ययदं ह्वनददिमसिद्धिदायकं ॥ ६ ॥ ह्वनाथ

५ X अरिषकलाय धून मनु मलानानि मला रिषक मला कडा धना वांगु ह्वनसिद्धिलायया निसिद्धिन २०

जिमि विमविष्ठा यमालधक गुन्याकयाधनायाना ॥ ॥ धनगुनं ऊययानाडा ॥ वाकयाय

॥ ॥ दलानिमयारुवावन्निनिदिगारुवः ॥ ॥ हिलंधायक ॥ गृहीभाही मयारुवावन्मयिसः

निदिगारुवः ॥ ॥ जयमलादलाय मनुविय ॥ ॥ जययायधुंकाडा हलारिषकविय ॥ वज्र हिलसथिय ॥

२ नानाविजगुन्यादि सत्यदादं वलावयन् मनु लान यवादानं यक्षयायाय सस्मिन् ॥ गुन्याकयाय

वाक्यकायाक ॥ मनुन्थीक ॥ किरन ॥ आशीर्वाद ॥ मनुलविस्जति ॥ सर्वं मारुनिद्यय ॥ सिद्धं रिय ॥ दिगुस्मय ॥ पंचमाल

निद्यायायगु वव्यागु सामयागु सकुतागु भवयागु सकुतनगु धरुतायंर सहायायगालकाया गु *
अधिसानयाय ॥ ॥ ॐ नमः सुप्रतिष्ठितवज्रस्वाहा ॥ ॥ वाकपूजा ॥ मधुलथिल ॥ सखीगन ॥ कि
रुत ॥ दामायन ॥ आशिवा. सगंभासनिजाक ॥ चिपूजा ॥ दाना. दगुसमय. सात्रिगहनयाय ॥ स
मयाववा. गणवका ॥ ॥ ॐ नमः शिषकविधि ॥ ॥ ॐ नमः ॥ सयाकविधि ॥ ॥ ॥ ॐ नमः ॥
लसखंमठसिद्धमूकसं सयागु दिगुलिसक धनिथाकय ॥ ॐ नमः ॥ पूयागु ॐ नमः सकलयाय ॥ कृष्णवन्ध
नपूजानिमित्तीथं ॥ ॐ नमः पूयागु ॐ नमः संजय (धरुतायामयदं. गुनरुलदन. यकगवा (गान. सिधुनयम
निर्देषाममधु थिला. तिसमाधि ॥ यं वगवायाय ॥ कलसखंमठक संसिधमूसयागु दिगुसमयादि. रावना.
धूयनिल ॐ नमः लास ॐ नमः वका. (गधनविधिथं पूजा पूयागु स. यं लाघंरुति. दवपूजा. रावना. धूय
व. वव. माम. सक. लाक. धरुतावसलयाय. धर्मयागु लासुलखंरालयाय. गुनयागु दार्थनायाधक ॥ *

१ व. क. ल. पूजा

निलाञ्जनलासाग्नित्रका स्नानधर्मलुल सिध उज्जं ह्यं नवय समयधाममट घृष्टान्यास सायजय सिद्धं
य पंलांघंठुमि ॥ ६ ॥ राकल रालभावात्रयय रावना लासाग्नित्रका सर्वविषय सिद्धंय गावाकनकंदग
काय यानंया ससिससान गुन्धुलदनक मटपूजा यद्वगव्यविषय संखलनस्नान वाय ॥ ११ ॥ खदयसू ॥
वीजाकवंमानालाकधाउरुलित्वाञ्जकनिहंखवनंगत्यागसादाकयधीलंलिनंविनयन यायाद निलाञ्जन
कलसत्रखलसनान ॥ ७ ॥ लंलंसकलसखवजयनमानमयगंधावसंयूकसंखसं ॥ ८ ॥ धिगं ॥ पंचयियूहं ॥ कान
मकमश्चाथेसंवृद्धवजसंखयिकविषयकलगां ॥ ९ ॥ घटविराक्तगफनृपखरावं ॥ १० ॥ लंकुम ॥ ११ ॥ किनीजलनूप ॥ १२ ॥
टिगिसाधनदवगावकं स्नानसुखमानीय हृदिजकिनंविंविषय ॥ १३ ॥ ॥ सवाधयक वाक ॥ १४ ॥ उं ॥ १५ ॥

॥संवाधयक वाक्य॥ ॐ आ॥ ४८

21

वैडह्यकषासुष(सुसर्वापायवि(षाधनह्रंस्वादा ॥ श्रीकनंगिलकः ॥ उँआः वज्रनेललयनाय स्वादा ॥ थकलिन
 केवाहंकः ॥ उँआः सकृटकषाधाव(स स्वादा ॥ उँआः उषकवध(सल्लानाकर्ष(स स्वादा ॥ हाग्वसयलयाक सु
 ननुकंसिद्धयोकः ॥ उँआः यारुजकषाददनस्वादा ॥ वृसङ्गयरागसं ॥ उँउद्यागाल्यादः ॥ उँलोकन उँहूनः
 गाकवृक्षाशिनंवाविचिरुसवृयंदर्यनदृष्टह्रंस्वादा ॥ थनकुमालिस्थकांउज दिक ॥ रुडनरु वृसायाककेवास
 कलंसयसैनेखकया ॥ खरिक्कवोः ॥ थाकालिमहुथिल स्वंधायः सुनि ॥ हागाकन कमायन आगिबोद स्वर्गः
 विषयवरुक्लाय वक्रमधिनांरागयाव ॥ गमकवनामयागनडाकाय ॥ वाक्विदिगूदव आगंदव गदस कल
 हाहायक ॥ वराश ॥ थाका नक पनिकर्मावयक ॥ महुलविमरुन स्वर्गनय मदानिद्यय विलूजा आद

सिद्धय

थ
दि

कृष्ण दिगुसक्तयष्टक समयावक ठाऊनाउत्त॥ पूजानयसिद्धाहलंशुल॥ ॥ धनिसयाकविधि॥
॥ वाधानयंकविधि॥ ज्ञायांकलहासमंमनयंदगवयागधतिथिकय॥ ७ वाय मूषाहाऊनअधिसाननऊसुनावंध
नयूजानिमार्थ॥ गुनमधुल यंदगवयाय सिधाय मधुलधिल्ल खांवाय मुनि गिसमाधि कृष्ण सग्व मट
थायिंयूजा रावना धूयनिलऊन धा सि ऊ खांने स धा म पू यधर्माद्यादि वाधानयंकक नसिकागाकअनद्य २२
क यिगदयसं सूर्यदशन धनंदनक धारुसखादाय॥ ॥ खांमधु॥ दवयूजा॥ सद्गुका वनिडाभगय
॥ न्नायदनुक्तसिद्धमूधनियूजा यधर्मा मूकान्द्रपूषणाकन विसऊन॥ ॥ यंकयिंन रावना नि
लांऊ गावामटहंराय यंदगवयविय॥ ॥ वाक्य॥ ७ मधुल्लिखनवखादि॥ ॥ ७ नमासधाकोना

यखादा उँजादिनायखादा उँरानवखादा उँसदमानसवखादा उँगयनायखादा उँगयनखादा उँसविना
नवखादा उँविरावसखादा उँसगदगियेयखादा उँदिमनियखादा उँअदर्थयिखादा उँगिवायगियः
खादा॥ ॥ रावना धूँधा सिऊ खां नेवयादियधर्माद्यादि॥ (धोवाद्याय॥ अर्थ ॥ गाजूकदा मि. गय॥

॥ उँनमारुगवत्यआदित्यायकाठिवगमगाय. आदित्यगर्हसमूहाय. कलिहृद(ग)रुवाय. अनूनसस्ति
नाय. कर्कशनयमनागाय. वधूककूससदृषाय. नकवासनकपूष्यकधजग्यायविनाय. उनंगनथसमान
धाय॥ अत्रग२रुगवनमन्यानांदिगार्थय३ उँदंअकगगन्धयूषधूपदीयायदानयगिगृहिगान्दानयलुः
थायमानअमूकनिमित्ताथेआदित्यादिअर्थयगिहखादा॥ ५१२दक्षणा॥ (श्लोक ॥ उँनागसंरुवसंकासय

लना म समग्रं स्यात्मानं नृवं वरु सूर्ये नमामि इहं ॥

॥ वृत्तिध सूर्ये दत्त वृत्तिध दाय ॥ दत्तं सूर्ये

यै न क नडाह सिहं नृ ॥ अह वि सऊन थानयि नाया क दाय मधु थिल खां वाय रुनि मसी वी द वि सऊन

सर्वं माक्षानि दय क्मालि पूजा माल ॥

॥ नृ नि नृ ख वा व च न विधि ॥

॥ २०७२ ॥

॥ धो सर्व वि य ज्ञ

ध
नि

॥ विरू पूजा ॥ ॥ कि क द न डा ह य ॥ ग्व सर्व वि य समया व क क ड मा वा ग ड च क मू क स वि ॥

॥ २१

॥ २३

या नि ग द न वि धि मा द ॥ ॥ दू सं ल क्क कल सर्वं मट वलि यं व ग वा पा ॥ थ नि थ क य र वा य गु न म धु ल यं व

ग य दाय सि ध ग य हि स मा धि थ न र्दी मा वा ग ल ख स्यं द ग वा य ख रु क स ग स्यं गु न म धु ल द क लं ख व लि पू जा

ध ध र्मा द ॥ नृ ना द नृ नि र व ना दि पू जा य ध र्मा ज्ञ वा न मू कि पू व स ग क न वि स ऊ न ॥ ॥ रा व ना रा वा म

गरुंगाय. नीलाञ्जन. ब्रह्मीभावागय. मृदुहृदाय. कंठागारि. दिवाका. क. रुला. शिष्य. कविय. कल. सम्वं. मट. सरावना. धूप.
नीलाञ्जन. विधि. थं. पूजा. दव. पूजा. रावना. धूंगा. वा. मट. गरुंगाय. नीलाञ्जन. विधि. थं. पूजा. वलि. विय. वा. क. पूजा. मधु.
थिय. खां. वा. य. कि. गन. सु. रि. ण. गा. क. न. द. मा. य. न. आ. णि. वो. द. सम. द. ष. ढ. ढ. य. वि. ल. पू. जा. दं. २. आ. द. क. ण. वि. स. ऊ. न. कृ. ण.
मधु. वा. ग. ल. ड. आ. आ. ग. म. स. न. य. सि. ण. आ. लं. पू. जा. सम. व. क. ग. ण. व. क. ॥ ध. गि. या. णि. गु. द. न. दृ. ण. वि. धि. ॥
स. रि. कु. न्. क. ल. स. म्वं. म. ट. मृ. द. व. ग. ना. घ. यं. व. रा. य. व. लि. या. ग. ध. गि. था. क. य. ॥ द. म. ॥ ७. वा. य. गु. न्. म. धु. ४. यं. व. रा. य. द. ष. य. सि.
॥ अ. लि. न्. ना. य. का. क. ष. य. न. स. स. दं. द. का. य. ॥ ध. ग. य. म. धु. ल. थि. ल. या. ध. आ. न. मृ. कि. ग. न. म. धु. ल. वि. स. ऊ. न. णि. स. मा. धि.
क. ल. ण. धि. वा. ण. न. कृ. ण. स. म्वं. म. ट. अ. लि. न्. ना. य. मृ. द. व. ना. घ. ध. गि. वि. धि. थं. पू. जा. य. ध. मी. दि. य. द. य. द. नि. थं. पू. जा. य. लं. धं.
॥ श्री. ल. क्रि. स. रा. व. ना. ॥ शा. द. द. वी. य. मा. सि. ग. नी. ना. स. न. स. नि. रा. सि. दं. न. स. य. म. द. स. गी. ला. क. दि. रा. य. ४॥ १॥ पू. जा. ॥

तुगिलाष्वा गत्यन॥ ॥ अग्निस्नान अग्निन्याहति॥ ॥ चल्काधूय दवयूजा ॥ रावना ॥ धूयगावामग रंताय निला ॥
 नविधिथंयूजा ॥ दवगाहगिविय ॥ ॥ धंलि ॥ दीमावागलस्वस्यंदकाय स्वस्ति कसगय ॥ गुनूमधुलदनक ॥ मट
 क्रसंसिधमूनियूजायधमोत्यादि ॥ ॥ क्षमाक्षत्रविसरून ॥ ॥ णिदरावना ॥ लाहागिनका ॥ क्षीलवसुगय सा
 द्यालिनिवा दिगलय स्वस्तिवाक लउलाय गनग नायिगदसूयूजा मासकलक कार्विकनंरगिव्यक नृसिध्वंक ॥ २४
 नानयाक अम्वलसामुमाद्रुयक लनंदायक कृष्णलंवनदायक त्वालसियक स्वासस्नानयाक धगयन धउरथास
 गय यंवयलवनमानसय यंवगायविय स्वांरावाक विसरून ॥ ॥ धनकृष्णरिषकस्नान गाथा यद्वज्रल
 स्य वलमालगीगं सनीत्ययत्युषधूयं वलदीयद्विद्विगग (श्वेयूजाविधोयगिसमंविमलेयगुनं ॥ गलमङ्गलंरवकु

नमस्तुभ्यो ॥ १ ॥

॥ धनसिद्धिर्नृणां यथासिद्धिर्गताया अवकलाय गिरिकः मनुः ॥ ३ ॥

रिगुवलाश्रयं नृणां ज्ञानं कसिद्धिदायकं स्वस्तिवाक्यं सिद्धिर्नृणां विषयः ॥ ४ ॥

धनुकननसुखं यथाकं यूननाथं यमकटयं वकुलाश्रयः ॥ ५ ॥

स्वनाद्यं सगान्धनैः ॥ ६ ॥

रावनाः ॥ ७ ॥

गतास्मादाकृष्टा रत्नं लीनविचित्रं ॥ ८ ॥

वास्यं ज्ञानं वलपि यमं विषयः मनुः ॥ ९ ॥

॥ १० ॥

गिनयद्दंखात् ॥ घिनाद्दविय ॥ मरु ॥ दंथाजकाद्दुर्गियरिद्धखात् ॥

॥ शूलपावनधियक् ॥ यंलाघंमुनि ॥

॥ दधवलि विधौ कुमालियूजा माहातीराधन मधुलथिल स्वांगन यूर्ध्वयाय हातारुन दमायन आः
 विदोद सवगय दैदं धा यूजा समाद्रुति यवहायकलक्ष्य दधवलि द्वाय विसृजत मधुयागसिधमूकलहालडाः
 ज्ञायः स्त्रीमात्राया लंयाक ॥ ॥ नृदिवाजिगुदक्षविधि ॥ ॥ ॥ ॥ नृगहीमनथक्रियाविधि ॥

॥ दसवकुन्ना जायांकलसग्वंसगनागघमूखटवल्लिधरिथाकय ॥ ३वाय पूषणऊसंकल्य सीमनथपूजावि
यानिमित्थार्थ गुनूमलुल यंचगव सिधुगय मलुलथिल स्वांवाय लंखवल्लिविसऊन एसमाधि दूषायिवायूजा की
लंरावना कीलंगाय उल्लीषवियामरु४ उंचघघाटय२त्यादि कृष्णधिवासन कलसग्वंसगादियूजा पूनाद्ववयूजा कू

दवनसस्यंदूकाय जातकर्मनीस्य वृत्तादहागा क्षणरिष्टीकाकाय स्वांगन दक्षायूजा सवतादि आहीर्वाद मधुयागान
गडा वलिश्चयमडा ॥ ॥००॥ गिदूसनक्रिया ॥ ॥सगिक्रद्वलिविसऊनवल्लिश्चय ॥ ॥थनलियागासननव

धु
गदमधुचाय थडा २ गदयगिरस्यंवीदीदावसदिग २ सवाय लुकि मधि सिसा हल्लादिनदिग २ सवलाकिस्वास्यं लाकया
लयगायघाय यंवसुका नडयक जग्निक्कुदन समसंथायना धूनकाव ॥००॥ नाय अलंकाय कलहाय वस्वस्यंदूकाविद्या २६
ककलसग्वमटनागदमखट्शीलक्रियदयकिणिकिदाआदाअलिं००॥ दक्षवलियलिकर्मनगय ॥ ॥००॥ वायगुनमधु
ल यंवगय सिधगय मधुथिल लंखवलीश्चय ॥ गिसमाधि यंववकायाथग्वय कक्षाधिवसन कलहादिकिदाआदार्थ
जा नेवद्यादि ॥ पृथन्यास यंलांघ मुनि यधर्मादि ॥ ॥अग्निस्वायन यलांदव मधुल पूजाविधिथं पूजा ॥०॥ अग्नाद्व

दवताहृति॥ २ ॥ अथ यागिगृहलब्धी क्रिया॥ दहा कर्मवानविधिथं॥ यगिष्ठाविधि॥ धनलिनडागृहपूजा॥ ॥
मध्यसुखानरुहलतासं॥ रावना॥ रावनीयगिसनादवीमात्मानं रावयत्॥ कणाखदयज्जकार्मवदुमधुलनस्थायत्रियं
कार॥ गदस्मितांगुनूवृद्धाधिसत्वादीनां॥ अवरुसस्यसत्त्वानां कृत्वा॥ अगनिस्सुवतगत्वा॥ मदायगिसनायमुखान्॥ सगलयनि
वानान्यूनगागगययद(हादृष्ट्य॥ अकर्म॥ उँवजवकृद्॥ २ ॥ उँवजोवृद्धाज॥ उँवजयागद्॥ उँवजश्टवँ॥ उँव
जांवहाहा॥ धूप॥ कर्पूर॥ नीलाञ्जन॥ स्ना॥ विरुणीखं॥ ऊजगायू॥ स्वांगायू॥ नेत्रय॥ मट॥ धन॥ पूष्या॥ यलाघंमुगा॥ जाय
उँमहिधनिवजगिमहायसैगिर्नहँ॥ रुद्र॥ स्वाहा॥ यलाघंमुगा॥ १ ॥ पूर्वसं॥ खानगसं॥ रावना॥ आर्यमहासादसयमद
निंरावयत्॥ धूप॥ क्षीखंद॥ विग्न॥ कसुनि॥ ऊजमहाकृ॥ स्वाँडत्यन॥ नेविद्य॥ दीपहाकृ॥ विकं॥ हागया॥ जाय॥ उँमृगवदवद

१॥ यवत्र विष्णुर्द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वादा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ २ ॥ दक्षिण ॥ स्नानं संरावना ॥ आर्यं महा मायूरी मात्मानं रावयन् धूप
 कक्षनी ॥ विगयं वगध ॥ ऊर्जं ॥ ऊर्जं ॥ स्वां ॥ नरुल नेविश दीप ॥ काविकं जाय ॥ उं ॥ नमः विष्णुकिनी गुरुं संनदक्षिण
 कर्षादिर्द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वादा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ ३ ॥ पश्चिम ॥ स्नानं संरावना ॥ आर्यं महा मऊन ॥ सावित्री मात्मानं रावयन्
 धूप ॥ नील चिरु नक वंदन ॥ ऊर्जं ॥ ऊर्जं ॥ स्वां ॥ ऊर्जं ॥ नेविश दीप ॥ काविकं जाय ॥ उं ॥ नमः २ संराव २ ॥ इयवल विष्णुनि २॥
 द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वादा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ ४ ॥ उत्तर ॥ स्वां संरावना ॥ आर्यं ॥ नील वले मात्मानं रावयन् धूप ॥ वा न ऊर्जं ॥ ऊर्जं ॥ ने
 विश दीप ॥ नामविकं जाय ॥ उं ॥ विमल वियूल नयवल नमः विष्णुर्द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वादा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ ५ ॥ धनीलिगदपू
 जा ॥ ॥ ॥ ॥ रावना ॥ उं ॥ आदित्यदवगामात्मानं रावयन् धूप ॥ कंदू ॥ स्नान ॥ चिरु नक वंदन ॥ ऊर्जं ॥ ऊर्जं ॥ स्वां ॥ ऊर्जं

ध
 ७

सुगुति दूद मधि ह्वानाय रुलमिगसी वीही खानडा सय मावासा दीपयल्काविकं अर्घेहिऊल नेविश जाय उं
नमारुगवगमधाकानायखादा ॥ पंलांघंमुग ॥ १ ॥ उं नमासा नदवतामासानंरावयन् धूपकपूत खान विरु श्रीवं
उ ऊऊमगायू खानगायू सुगुतिधनि मधिवयनाधि रुलमागास वीहीशयूदा मल सय हांघ दीपशयूदा मल विवं
अर्घेसति नेविश जाय उं ही गांघुवखादा ॥ पंलांघंमुग ॥ २ ॥ उं अमावदवतामासानंरावयन् धूप गुंगुलि
विरुवकवदन ऊऊमूका उं खान ऊा उं सुगुतिवाक् मधिलश् रुल नानसि वीहीयल्का सयथूसायूल दीपयः
ल्काविकं अर्घेयूल जाय उं नकांराकमानायखादा ॥ पंलांघंमुगि ॥ ३ ॥ उं वधदवतामासानंरावयन् धूपसऊन
विरुवकुनि ऊऊमूंयूव सुगुतिधलखां यूव मधिमथ रुलममसि वीहिंलीका सयलं दीपलीकाचिः

कं. अर्घल जाय उँवृजाय स्वादा॥ यंलांघंमुग॥ ४ ॥ उँवृदस्यातिदवतामात्मानंरावयत्. धूपहिङ्गय. विरवकुम्भ
 म. ऊजमयूव. खानयूडा. शुगुतिधनिदू. वीदिगछ. सययीनवसून्. दीयसाधल गडासि. अर्घल जाय उँ
 शमास्यदाय स्वादा॥ यंलांघंमुग॥ ५ ॥ उँहुकुदवतामात्मानंरावयत्. धूपकुक्षुदा. विरग्रीखलु. ऊजमगायू. खो
 मायू. शुगुतिसाखल. मधियूनिमधि. म्वाव. वीदिक्कगुलि. सयहाल. अर्घमूटि. दीयधल जाय उँअसुवाकमायः २६
 स्वादा॥ यंलांघंमुग॥ ६ ॥ उँहानिथमदवतामात्मानंरावयत्. धूपगन्धवस. विरसीन. ऊजमहाक. खानदाक.
 शुगुति. वाकुमास. वीदिमास. सयवाखल. गुप्पमासि. दीयभामसोमलविकं. सयमावासा. अर्घन. जाय उँहानिथ
 नायकसुवर्णय स्वादा॥ यंलांघंमुग॥ ७ ॥ उँवाहदवतामात्मानंरावयत्. धूपअसुगन्ध. विरसर्वगन्ध. ऊजम

२६

सक खानदाक सुगुतिमाठा मधिरिनि। क्रीनसि वीदिन्वाग सद्यस्वम् दीपदाकसामविकं अर्घमाडाग जाय। ॐ
मृगप्रियायस्वाहा॥ यंलांघंमुग॥ ६ ॥ ॐ कुरुदवगामात्मानंरावथग् धूपवाल चिरु। गानाचं ऊजमनागा खानवागा
सुगुति। सामलजा मधिरूपि। गडासि वीदिकावग सद्यस्वम् दीपकुलविकं अर्घमदिक। जाय। ॐ आगिक
गवस्वाहा॥ यंलांघंमुग॥ ७ ॥ ॐ ऊजमदवगामात्मानंरावथग् धूपकर्यून वीगणीस्वत् ऊजमगायू खानयन सु
गुतिधनियमधि स्वकि। वीदिगुरुग सद्यसिंदासन अर्घदन जाय। ॐ ऊजमनदणयः स्वाहा॥ यंलांघंमुग॥ १०
॥ ॐ ॥ धननाहवलिविय॥ - ॥ वलिसनंस्वगय। वलिराहुं गंगारावथग् यंकालगवायूमधुलं वलसगा
काकिकिगंलीलधन्वारं गदूपनिर्वकाववाग्निमधुयिकागंस्वाकिगंनकं गदूपनिर्वकावा वूलिकापनि। गदूपनिश्वा

कालजगन्वलिरुषु पंचासु गयं वगश्चसदिगं ॥ ॐ कूं ऊं औं खूं डवीरुगं यून ॥ कावयगनाग. ङी कीरुगं रानसर्वोक्त ॥ ४३ ॥
 पीनयग ॥ ॐ ऊं वज्रगनदवीरुगं द्वितीयावयग ॥ ॐ कावयगनागीरुलं यून ॥ ॐ ऊं ॥ ॐ वदनलक्ष्मीनामृगमानीयगलेव
 लीनविकथग ॥ गतालाकपालाकर्षणमृदंडर्षयग ॥ अर्थयायादि. यूं ऊं. यं लाघं सुग ॥ ॥ वलिमाला ॥ ॐ मदाप्रति
 सत्र. मदासासुयमर्दनी. मदासायूत्र. मदाहीनवगी. मदासकानूसाविही. वृद्धावेवमासाना. विद्यादवीमदावला. माग ॥ २७ ॥
 कीरुक्रमिवेव. गानादवीगथाकुही. वज्रसंखलया (श्वेव. मदा (श्वगाग (थेवव. मदाकालिवदूगीथ वज्रद्वितीयागथाय
 ना. स्याहीव वज्रयाहीव. वज्रयाहिमदावला. वज्रमालामदाविद्या. गथेवामृगकुक्षुली. अपनाजिगामदादवी. कालक
 र्णमदावला ॥ गथाधन्यामदाशुभा. यमकुक्षुलिववव. पृथदकीमनिचूण. सुवर्णकाहीवपिंगला. मदागजागथाद

[illegible]

यमोदये अर्घ्ययगिष्ठस्वाहा ॥ यंलां घंस्तुत ॥ कुरुवर्धुमदाधाना सुकुनामरीषणीदूर्ध्वकरिवशादनीकाधवजीन
 माम्यदं ॥ २ ॥ पूष्यरागा ॐ अर्थमदा मायूयै अर्घ्ययगिष्ठस्वाहा ॥ यंलां घंस्तुत ॥ मदाहाना रुवादवी हसव
 ल्युपराकन विद्यानाहोमदाहानं मायूनीप्रणमाम्यदं ॥ ३ ॥ मणिक ॐ अर्थमदानसावित्र्यै अर्घ्ययगिष्ठ
 स्वाहा ॥ यंलां घंस्तुत ॥ वेदूयै सूकनिर्गोमदनासूकविशमा काकावर्धुदनीविद्यानसामिदिवयूनीनि ॥ ३०
 ४ ॥ मन्त्रा ॐ अर्थमदाणीतवर्धु अर्घ्ययगिष्ठस्वाहा ॥ यंलां घंस्तुत ॥ यान्वकुं विसानादिनकारानूनासिनी
 ६ ॥ मवर्धुमदादवी नमस्तुतगसागनी ॥ ५ ॥ ६ ॥ आदित्ययात्रत गिऊल का ॐ अर्थमदा ॐ नः
 मारुगवर्धु आदित्याय काव्ययगाय आदित्यगर्गं संरुणाय कलिहृद ॥ ६ ॥ रुवाय अनूनासिनी कर्क

नयमनागवन्धुकुसुमसदृसरुगाः नकुवास नकुपुष्पगन्धयस्त्रायविनाय तुलंगवथसमावृदाय दवदा
नवकुंराकुञ्जकिन्त्यकिन्ननसदिनाय अवगवशरुगवन्मनूयाणांदिनाथाय अर्घ्यदमधुलसध अन्नययद
दमदाग गन्धयुष्पधूपदायायदान वलिके यतिगुरुणां नमोरागवगयस्यकियत कर्मगस्यपीतिकनारुवादा
नयगिअमूकस्य षानियुष्टिंक्षुद्रुगियजमगस्यआदिनाय अर्घ्ययतिदस्त्रादा यंलांघंमुक्त नागसंरुवसंका
षायमनागसमूहवंसकाश्ववथमावृहं वजसूर्यनमामादं १ ॥ सांममि रायूदास अथवाडादा डंनमः
शामदवाय अमृगाहवाय नंरासगाय नरसपूजय धववपुष्पसदृष्टाय स्वीनसमूहवाय अन्नयगागाय ४ ॥
कुवासकुङ्कुगन्धयस्त्रायविनाय दंसमावृदाय दवदानवकुंराकुञ्जकिन्नरुवसदिनाय अवगवशरुगवन्मनूयाः

ले
५

नांदिताथीयः ॥ दंशदमधुलमध्वजूनप्रविष्टः ॥ दमदगगंधपूषधूपायदानं वलिं प्रमिगृह्णानमा ॥ ३ ॥
गयस्यक्रियतः कर्मकस्यपीतिकनारुवः ॥ किंपूषिक्रूवेध्वजूनस्यसामायजूर्ध्वपगिदृखादा ॥ यंलंघंमुग
दधिसंस्तुखानारंक्षीलार्धननसकृदं नमामिहनिर्नयदं ॥ २ ॥ मं ॥ यूलयल्का ॥ दंनमार
गतगजंभावायमदादवपूजायपृथ्वीगर्भसंस्तुगायस्तुतुस्तुसंप्रहलिगायनकवासनकपूषधूपगन्धयज्ञायविक्रयः ॥ ३ ॥
अवत्यदः ॥ ॥ रुवायः ॥ नवदः ॥ गागायः ॥ दामनधनूधायः ॥ वज्रधृक्कुलदवगायः ॥ दवदानवकृष्णविनाकनसदिगाय
जुवगनश्चरावनमन्यानांदिताथीयः ॥ दंशदमधुलमध्वजूनप्रविष्टः ॥ दमदगगंधपूषधूपदीपायदानं व
लिं वप्रमिगृह्णानमा ॥ ३ ॥ यस्यक्रियतः कर्मकस्यपीतिकनारुवः ॥ किंपूषिक्रूदगीयजूनस्यजंभावायजूर्ध्वपगिदृखा

॥ यं लोचं मुखा गंवावनागिकांतिव. ६८ अथिकवाक्यं यमासनस्त्रिगं सोम्यं वादिगायनमाम्यदं ॥ ३ ॥ वृ॥ श्रीका
॥ ॐ नमो रागवगवधाय. ६९ मसूगाय. वादिही पूगाय. अर्कालि. ७० कमलासदृशाय. सूर्येदवगाय. मद्यदा. ७१ रुवाय. अ
७२ य. ७३ गागाय. पीगय. पीगगंधय. ७४ यविगपीयाय. कमलासमान्वाय. दवदानव. ७५ कंरा. ७६ दाकिनासदिगाय. अवगव
७७ रावन्मनूयानांदिगार्थय. ७८ दंरादमलुलम. ७९ नृपव. ८० दमदा. ८१ गंधय. ८२ धूयावलिंव. ८३ प्रगिगृ. ८४ तानमास्तु. ८५
८६ यस्तु. ८७ कर्मकस्यपीगिकाम्यदं. दानयति. ८८ किपु. ८९ सुक. ९० वे. ९१ नमस्य. ९२ वधाय. ९३ अर्धप. ९४ गि. ९५ दृ. ९६ स्वा. ९७ दा. ९८ यं लोचं मुखा
गंवावनागिकांतिव. ६८ अथिकवाक्यं यमासनस्त्रिगं सोम्यं वादिगायनमाम्यदं ॥ ४ ॥ वृ॥ लृ॥ रा. ९९ ॥ ॐ नमो रागवग
१०० वृहस्पतये. १०१ अंगवसूगाय. १०२ वदुर्वेदाय. १०३ दवगागुवायाधाय. १०४ काकेनव. १०५ ये. १०६ सिंधूदा. १०७ रुवाय. १०८ दवदानव. १०९ गंधर्वा. ११० सुनगा.

ल
दि

उक्त्वा किं न्यतवसदिगाय. अत्र नरशरवावत्तुदस्य गय. सद्विगाथय. ॐ दंशुदमलमध्वनूययदु ॐ दमदमगं
धयूयधूयायदानवल्लिं. परिगृह्णान् नमाश्चुनयस्य कियन. तस्य पीठिकनारुव. क्षातिकुनूवमऊमस्य वृदस्य ग
नियमूर्धयगिच्छलादा॥ यं लं चं मुग॥ सप्रवानाधियानूधं. क्षास्त्रावकां वनायरां वल्लयाय मालिनं वावस्य गिनमायः
दं॥ ५ ॥ ॥ सुगि. कयगुलि. ॐ नभारगवगं हुक्काय. रगुसूगाय. सूनायाधाय. वेनावनकुलदवगाय. दधिकुलसं २२
काक्षाय. रागादक्षारुवाय. रागोवक्षाय. हुक्कावासहुक्कायूयधूयदीययहायवीगयियाय. गुनगावृहाय. दवदान
व. गंधर्वासूनागनूठ. कुरुक्षेत्रादिनरसदिगाय. अत्र नरशरवासदिगाय. ॐ दंशुदमधुलमध्वनूयविध्वग. ॐ दमद
नगंधयूयधूयदीयायदानवल्लिं. परिगृह्णान् नमाश्चुन. यस्य कियन. कर्मोतस्य पीठिकनारुव. दानपरिअमूकसां

किं नू प्रसिंच वृम ऊ न स ह्युक्ताय अर्घ्यं प्रणिच्छत्वा दा ॥ यं लाघं सु रा ॥ नाना सा मु स समंदवं हु शरु नं ता स नं य स र
वा पि दु सं व दान वं गु न न मा म्य दं ॥ ६ ॥ ॥ ॥ न मा स म ड नं मा णि नि श्च वा य आ दि ह्य पू ज य द्या या ग रं सं रु ना य य म
सा गाय नील व क्षी य द वि न द (६ ॥ रु वा य कृ त न ध नू ण य अ क्षा य द व ना य नील वा स नील पू ष्य गंध धूप दी य य स्त्रा
य वि ना य द व दान व रा ध्व र्चो सू त र्क सा णु कि नी स दि ना य अ व रा न र रा व नू दान यि अ म्क दि ता र्था य ॥ दं ग द म धु ल
म (ध अ नू य वि ष्म ॥ द म वा रा न्ध य ष्य धूप दी या य स नं व लिं व यु ति गृ ङ्ग ता न् न मा ३ मु त य स्य क्रि य न त स्य प्री ति क व
रु व दान य ति अ म्क स्य ॥ किं यं सिं क नू का ष्य य (सा गाय ६ ॥ ऊ न स ह्यु नि श्च वा य अ र्घ्यं प्रणिच्छत्वा दा ॥ यं लाघं सु रा ॥
नी ला रं गी द दं क र्म का य स मा क र्मा व सि पा णि सं नि र श्च कृ त व क्षे न मा म्य दं ॥ १ ॥ ॥ ना ॥ ना डा व न् न्वा न ॥ ३

ल
लि

उंनमःनादव.सिंदसूगायजुसुगधियाय.कूली.षाध्वनदवगाय.मलयद.षा रुवाय.कसुवर्धुययाधि.वागायकसु
वास.कसुययधूयदीयंगन्धयल्लयविगधियाय.भयनथनूदाय.दवदानवगन्धर्वसुनगनूठकूंरा.किनीसदिगा
य.अवहनशरगवन्दानयलिदिगार्थाय.ॐदंगदमलुलम.ध्वनूयविष्णु.ॐदमदागगन्धधूयायसावदलिंव
प्रतिगृह्णान्.नभाइसुगयस्यकियतगस्यपिगिकवाहव.दानयल्लु.कियूसिंदकू.षाध्वनमस्यनादवजुर्ध्वयः ३३
किच्छस्वाहा॥पेलोचंस्तुति॥दिजमिगसुसंस्तवंमानवानांरयंकनं॥यामसुंमर्चकायाश्चविधूयुंदनमाम्यदं॥ ६
॥क॥कूल.कानाग॥उंनमःकगवकाषसूगाय.कालयाषाध्वनदकाय.स्वकूलदवाय.धूसवर्धुय.शीयव
गद.षा रुवाय.कसुग.वागाय.धूसवासधूसययगन्धयल्लयविगधियाय.धूसनथानूदाय.दवदानवकूरा.किनी

किं निसदिगाय, अवननरुगवन्दाद्यपिदिगार्थय, ॐ दं गुरुमल्लम (अ) अनूपविष्णु ॐ दमदगयप्यधूपदीः
धापदानवलिक, यगिरु, क्रुगान् नमाइरुगयस्य क्रियक कर्मस्य पीतिकारुवदानयरुमृकस्य ॥ क्रियसिं कनूसूद
ऊमस्य, कनवमृद्यं यगिरु स्यादा ॥ पंलां यं रुग ॥ स्वभयाहा कनयगुं, कायापूरुखनं, विविगुविगुदहारं यागिकरुन
साम्यदं ॥ २ ॥ ॥ अवनन, अवनन ॥ ॐ ऊमनऊमन दगुदवगाय, वेवाचनकुलसंरुगाय, सार्थसनायविष्णाय (ह्य
नवर्ह्ययधुक्रवासव्यगयप्यधूपदीयगन्ध, यल्लायविगाय, दवदानव, कंराहा किनीसदिगाय, रागाद (॥ रुवाय, अवन
नरुगवन्, दानयरुदिगार्थय, ॐ दं गुरुमल्लम (अ) अनूपविष्णु ॐ दमदगगंधयप्यधूपदीयापदानवलिक, यगिरु
क्रुगान् नमाइरुग, यस्य क्रियक, कर्मस्य पीतिकारुव, दानयलिमृकस्य ॥ क्रियसिं कनूसर्वदवस्य दवतासवीथ

कथियऊ नमनस्य ऊ नमदवगाय अर्घ्यं पश्चिच्छासा ॥ पंलं घं सुग ॥ ६ ॥ यां शा नू स संका हां सर्वदवनमस्तु गां सर्वोयं सर्वद
 वानां ऊ नमदं नमाम्यदं ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ मिमं दुपक ॥ ७ ॥ ॥ श्री ॥ न नैयकानस नखस्यंदय ॥ स्वस्तिकसख
 न गुनमधुलदनक ॥ वलिखाननम्य मटयूजा वलिविसऊन ॥ विषयरावना निलाजन लासामिनका अविनंताय
 दिगल्ययउथं साछालिमिवाननाय साछयक लिमिवाजांका अद्रवालनक मासकक नोयाहसयूजा लसिधंका उकथा २४
 सगसां अवनसामनं माद्रूपक लासासगसां पिवसमूदया लवनलूय ऊअलं वगायाडा आचार्यं हां खलवनाकादि
 या कस्य अनयान हीकं वा नासवा रुयं वगंधं यं वामृग सिऊखा नासवा रुयं वामधि यं ववलक रुसी अलगासि पि
 लासि दं वनासि अया धगिऊन सग अवनसगग सर्वकर्मिक कलनलां याचक पिडासमूदया लवनं हायका

कसलंखादि॥ ॥ यं वगंधनकसवयक॥ ॐ वज्रसूत्राश्चरितकजंगलयनाय स्वाहा॥ ॥ नखाचिकनंदयक॥ ॐ व
ज्रसूत्राश्चरितकजंगलयनाय स्वाहा॥ ॥ धर्मिधूनकाडाधडाश्रथासुसंगय॥ ॥ यं वगंधविद्याय गितं नक्षत्रविगालि गम पूजस
रिसादकाविथ॥ नूचिकजधिसानयाय॥ स्वस्ति वाक् गितक॥ ॥ धनलि॥ नदगददानवियक॥ ७ ॥ वि
य॥ आदित्य स्वांता मावासा॥ आदित्याय काष्मयरात्राय अग्निगारुसंरुगाय अमिगारुकलयवगाय दानवलिज्जम्
कज्जयूनाभग्यकामनार्थसर्वना॥ गायत्र्यां यथं नृजगघटिगन्दं नकाधनूमुखं मर्कसंययच्छम्यदां धनूपगि
स्तुर्थसंयच्छायामि॥ मावासावि दानविडाकपूजा॥ पदव॥ १ ॥ सा॥ शयूदाम॥ वांछ सामायदीनादीवर्तु
वसंरुगाय विज्वदवगायज्जम्कस्य॥ ॥ निर्थं नृजगघटिकं वांछं मुखं मर्कसंययच्छम्यदां वांछं सुदक्षिणां

प्रतिष्ठार्थसंप्रदाययाम्यदं॥ दक्षिणसंख्यपूजा॥ २ ॥ अं॥ प्रकाशसूत्राय॥ अं॥ नायसूत्राय॥ श्रीवदवगाय, दान
परुजमूकस्य॥ अं॥ स्वर्थनजगद्यटिगमूननान्दुखंमर्कसंप्रयच्छामि॥ अं॥ नान्दुखमूकस्य॥ अं॥ स्वर्थनजगद्यटिगमूननान्दुखंमर्कसंप्रयच्छामि॥ दक्षिण
सूत्राय॥ पूजा॥ ३ ॥ वृ॥ श्रीकालवृक्षयशससूत्राय॥ अदिनीयूगाय, वृधदवकाय॥ अर्क॥ लिङ्गकमस्तदृष्टाय
सूर्यदवगा, मद्यदाक्षरुवाय, अयय॥ गगाय, दानपरुजमूक॥ अं॥ स्वर्थनजगद्यटिगमूननान्दुखंमर्कसंप्रयच्छामि॥ ३
यच्छाम्यदं॥ सवर्धुदक्षिणां प्रतिष्ठार्थसंप्रदाययाम्यदं॥ दक्षिणलपूजा॥ ४ ॥ वृ॥ गच्छायीगवकाल॥ वृद
स्यगयसूत्रमिसूत्रसूत्राय, वदुर्वदाय, दवानां पाश्चाय॥ अकाखदवगाय, दानपरुजमूकस्य॥ अं॥ स्वर्थनजगद्यटि
गपीगवसुसूत्रमिसूत्रसूत्राय, वदुर्वदाय, दवानां पाश्चाय॥ अकाखदवगाय, दानपरुजमूकस्य॥ अं॥ स्वर्थनजगद्यटि
गपीगवसुसूत्रमिसूत्रसूत्राय, वदुर्वदाय, दवानां पाश्चाय॥ अकाखदवगाय, दानपरुजमूकस्य॥ अं॥ स्वर्थनजगद्यटि

सुलू. पूजा ॥ ७ ॥ ॥ ॥ कयगुलि. सुन ॥ ५ ॥ नमः ॥ शुक्राय रुद्राय सुगाय. देव्या गुवाया ध्याय. देवावन दवगाय. दानयलि
अमूकस्य ॥ यक्षा. ह्यर्थं. नृजगद्यटिगञ्जु. ह्यर्थं. मङ्कं. निर्योग्याम्यदं ॥ ॥ ॥ दं. पुनं. गदक्षि. णं. पुनिसार्थं. संयु. षा. कयाम्यदं ॥ ॥ ॥
कक्षा. सुन. पूजा ॥ ८ ॥ ॥ ॥ मास. कयगुला. ॥ नमः ॥ ॥ निध्वाय. सुन. सुगाय. द्याया. गर्ह. संरु. माय. उविन. विषय. सं
रुगाय. अक्षा. ह्यदवगाय. दानयलि. अमूकस्य ॥ यक्षा. ह्यर्थं. क. सु. धन. सर्वा. रुद्र. ण. सदिताय. नृजगद्यटिगञ्जु. ह्यर्थं. पुनं. म
ङ्कं. संयय. रुद्र. मादं ॥ ॥ ॥ धन. दक्षि. ण. पुनिसार्थं. संयु. षा. कयाम्यदं ॥ ॥ दक्षि. ण. कयगुला. पूजा ॥ ९ ॥ ॥ ॥ मा. ॥ मा. ग. अथ. वा. सा
क. लामल. ना. खि. म. ॥ नमः ॥ ॥ ना. द. व. सिं. रु. सुगाय. क. ल. ॥ ॥ धन. दवगाय. दानयलि. अमूकस्य ॥ यक्षा. ह्यर्थं. संयु. षा. कयाम्यदं
॥ ॥ खि. म. दक्षि. ण. पुनिसार्थं. पुन. रुद्र. मादं ॥ ॥ दक्षि. ण. खि. म. पूजा ॥ १० ॥ ॥ ॥ क. ॥ का. वा. ग. वा. न. स. ॥ क. ग. व. का. ण. सुगाय. ह्य.

मयाहासकाय एवमकूलदवगायदानयहः अमकस्य X यथा स्वार्थं नऊतघटिगं यं द्वागदानदुखं मच्छं संययद्यम
 दं ॥ द्वागददक्षं यतिस्वार्थं संयटाकयाम्यदं ॥ दक्षिणादानसपूजा ॥ ९ ॥ ॥ ॥ अदक्षं सिंहासनजासियागविय
 ॥ ॐ ऊमनऊमनदण्डवगायवेनावनकूलदवगायहार्योसनायविगायदानयहः अमकस्य X यथा स्वार्थं नऊतघटि
 गस्यार्थं यतिस्वार्थं दं दुखं मच्छं संयटाकयाम्यदं ॥ दक्षिणा सिंहासनपूजा ॥ १० ॥ ॥ रुनारुनगयावाक्ययाग ॥ ० ॥ ॥ ३६
 आदिरुयानमंगानयागनिश्चयनयानाहमा ॥ ॥ धनविषयद ॥ सामयादसगियाहृकयाद्वययाधनिवजाव
 र्ययागविय ॥ मकसाआदिरुयाहृकावाधवियमाल ॥ ॥ साहृककुरुयावाक्ययागंदूगुनूयागंदं ॥ ॥ धनि
 मूलाचार्ययागआत्मविंदू सूर्यविभूविय ॥ ० ॥ ॥ धनलिखस्तिवाक्यनलासानाडायरुमलुलदूयकवथयाह

आन. स्वस्ति क ससान ॥ ॥ रावना. निलांरुन. गावा मगरुं वय. सरुं नूया ॥ धनलि. वदुविं वूजडा बाहा रं जांक ॥ सूर्यः
विं वू. वडा नान रं क ॥ धनलि. आन दा सा या यिन. पा गा सन. अरु मंगल वाय. ऊव क गन ॥ धनलि. आन दा सा या द डान हि
लय गि. ल्व सा गय ॥ थया थान का धि ॥ थया थान नथ गय ॥ ॥ धनलि. रिं गु व ना स स्वस्ति वा क य द यं. नथ स. द जा य क
॥ लिरुल सा च कं रु क रु क. गा रि न गा न क. ना क न ॥ धनलि. सु व ला स. सि ग ला न. सि धु द्वा य गु व न ॥ धनलि. रु ट सा न दि
॥ म दू सा. दार्कि ॥ थु लिं म दू सा १० ६ वा रु ल स्वां डा हा या गु. ज चा या ना क गिल स द्वा क ॥ वा क ॥ डं न भा रु गा व ल स र्व
ग ला क य गि ॥ डं रूं रूं रूं रूं (६) ध य २ वि (६) ध य २ स म सान् व रा स स न् न ग. ग ग ल स रा व वी णु च. डं ड रूं व वि रु या य वि
हु च. अ रि धि क स र्व ग था ग रा. डं अ ४ द न २ अ य संधा न जी (६) ध य २ वि (६) ध य २ ग ग ल स रा व वि णु च ॥ स द स ल णि

संवाधिग. सर्वगथागगावलाकिनी. पद्यानमितायविपूत्रणी ॥ दक्षरुसीयगिष्ठिग. सर्वगथागगादयानाधिष्ठानां
धिष्ठिग ॥ डंमूद २ मदा मूद. वज्रकायसंदनग. सर्वकर्मावनन. पतिनिवरुय. सर्वगथागगासमयाधिष्ठिग ॥ डंमूनि २
मदा मूनिविमूनि ॥ डंमूनि २ मदा मूनि सुमूनि. गथागगा रूगकाठियविष्ठुवाविष्ट. वन ॥ डंमूद २ जय २ विजय २ सन २ सन
ल ॥ वनय २ सर्वमदानां धिष्ठिग ॥ डंमूद २ वृद्ध २ वज्र २ मदा वज्र. वज्रगर्भ. जयगर्भ. वज्रहालागर्भ. विजयगर्भ. वज्रहाला २ ग
संरुव. वज्रवज्रिणी. वज्ररुवकु ममहादीनं. सर्वसत्त्वानां व. कायपविष्ठुद्धिं व. सर्वगतियत्रि ॥ सर्वगथागगा (अमां ॥ डं
वृद्ध २ सिद्ध २ विधाय २ विवाधय २ भावय २ विभावय २ (आधय २ वि(आधय २ समस्तान्मावय २ डंमूद २ मदा मूद
मदा मूदा मदा मकु पदखाता ॥ संयुक्तं पूर्यं सदसंवा. दक्षरुसंवा. जूष्णरुवगर्भवा. दक्षध्वजयगाक. पूर्यध्वय

दीपगंधनेवद्यादि सर्वपूजारिः पूजयः ॥ मांससहिः सकवर्षः सकादितांगः सदसुवद्वर्णनार्थः दूर्वाकुष्ठाक्षतल
जासहिर्गं ॥ ॥ दसाधयऊयकनिःऊयवनिः गिः २२ रगवन् रगवनिः समयमनूयानयः सर्वगथागतादयः ६० व
वलाकयः अष्टदानू रयः १॥ सर्वासांयनियूनयः रयः ४ मदा रयः ४ ॐ आः १ हं स्वाहा ॥ ० ॥ धानः गुलिंदास्
नस्नानः दगः ६ लीयः ४ ॥ स्नानं दूचकः ॥ ॥ धनः कायः दूयः दूयनः दूलुगः अर्घ्यावकः स्नानगंकः पूजा
याकः पगायः दूयः दूचं प्रगियाः पूजायाकः स्नानगनकः ॥ ॥ धनः वक्षः जायायः स्वस्तिवाक्यः यः ६ मः
लस्ववाः ६ ॥ धनः नथदयं गुनूयाः स्वः असगयः ॥ धनः दवताः दूतिविषः ॥ ॥ धनः आदूतिविषः ॥ ॥ ॐ स्वादूतिविषः ॥
॥ ॐ मूवागादसाः मालकीः आदिनः सकतां नडाः विविधं हि कादूतिः ॥ ॥ धनः मदावलिविषः ॥ वलिमालावः

[illegible]

८

समस्यादिना. तावन्त्युपमस्यनीरुगवनी सर्वार्थसंपत्कनी ॥ ॐ अ १ हूं ॥ सर्वसत्त्वध्वनदत्ता. यतिसनामात्मानं शावय
॥ दक्षिणदक्षिणकालनसूर्यमधुलं ॥ वामदक्षिणकालनद्वन्द्वमधुलं ॥ कल ॥ यों हूं कावदयंदहूविकवदं विरा
य ॥ ॥ कमलावर्तेन हं स्वाधिसानं ॥ ॐ मणिधनिवजिहिसहायगिसनहूं २ रु २ स्वासा ॥ ॐ सर्वविघ्नहानय
हूं ॥ ॐ वज्रयुधस्वासा ॥ यथाधिसान ॥ ॐ अकारामूखासर्वधर्मानां ॐ अ १ हूं रु २ स्वासा ॥ वलयाधिसान ॥ ॐ अ १ हूं वद
२ रु २ स्वासा ॥ ॐ हनमनदहूं ॥ ॐ थागमनदहूं ॥ ॐ आत्मानं मनदहूं ॥ अंगन्यास ॥ ॥ रुगखदयजूका
नद्वन्द्वमधुलं ॥ कस्यायत्रियंकारं. गदस्मिनागुनूवाधिसत्त्वादिनां ॥ अवराससत्त्वार्थकत्वा ॥ अकनिसुरुवनं
गत्वा. महायगिसनायमूखादिनां. सगलयत्रिवावान्. पुनरागगतपद (हा दृष्ट्वा ॥ अकर्षण ॥ ॐ वज्रवक्त्रं

॥ ॐ वज्रं कृष्णं ॥ ॐ वज्रपादं ॥ ॐ वज्रसूतवं ॥ ॐ वज्रावहादा ॥ ॥ अर्घ्योदि ॥ ॐ आ ॥ ॐ जी ॥ यं वनयेय
वसत्कानाय अर्घ्यं परिच्छेदादा ॥ ॐ आ ॥ ॐ जी ॥ यं वनकाथेय वनसत्कानाय याद्यं परिच्छेदादा ॥ ॐ आ ॥ ॐ जी ॥ यं वनका
थेय वनसत्कानाय आवमनपरिच्छेदादा ॥ ॥ पृथग्यास ॥ ॐ मणिधनिवज्जिहिमसापनिसन्नहं २ रुद्र २ स्वादा
॥ ॐ विमलविष्णुजयवनजूमृगविबज्जहं २ रुद्र २ स्वादा ॥ ॐ रत्न २ संरत्न २ ॐ त्रियवनविष्ठाधनिन्नवलहं २ रुद्र ३ ७
६ २ स्वादा ॥ ॐ कालीयस्वादा ॥ ॐ कालनागीयस्वादा ॥ ॐ कालकर्णायस्वादा ॥ ॐ ध्वजायस्वादा ॥ ॐ वज्रोक्लीयस्वादा
॥ ॐ वज्रपाणीयस्वादा ॥ ॐ वज्रसूतायस्वादा ॥ ॐ वज्रावहायस्वादा ॥ ॐ गन्धर्वस्य १ स्वादा ॥ ॐ कुम्भक्षेत्र १ स्वादा ॥ ॐ
नाराय १ स्वादा ॥ ॐ यक्षस्य १ स्वादा ॥ ॐ मधास्कानायस्वादा ॥ ॐ हीमांसवेस्वादा ॥ ॐ नकांगकुमानायस्वादा ॥ ॐ वृषाय

स्वादा ॥ उँ हामायादाय स्वादा ॥ उँ अमृतागमाय स्वादा ॥ उँ कुरुवर्धाय स्वादा ॥ उँ अमृतप्रियाय स्वादा ॥ उँ जातिवर्ध
स्वादा ॥ ॥ उँ कुरुर्धिकाय स्वादा ॥ उँ नासिनीय स्वादा ॥ उँ मृगसिनाय स्वादा ॥ उँ अजाय स्वादा ॥ उँ पुनर्व
पूषाय स्वादा ॥ उँ अश्लेषाय स्वादा ॥ उँ मघाय स्वादा ॥ उँ पूर्वरात्राय स्वादा ॥ उँ उरुनरात्राय स्वादा ॥ उँ दक्षाय
स्वादा ॥ दिगय स्वादा ॥ उँ स्वागय स्वादा ॥ उँ विहाय स्वादा ॥ उँ अनुराधाय स्वादा ॥ उँ मूलाय स्वादा ॥ उँ पूर्वभाद्रपदय स्वा
दा ॥ उँ उजाषाढाय स्वादा ॥ उँ अश्लेषाय स्वादा ॥ उँ वषाढाय स्वादा ॥ ॥ ॥ धनिशाय स्वादा ॥ उँ धनि
वषाय स्वादा ॥ उँ पूर्वश्रावणाय स्वादा ॥ उँ उरुश्रावणाय स्वादा ॥ उँ नवमीय स्वादा ॥ उँ अश्विन्य स्वादा ॥ उँ अनन्य स्वादा ॥
॥ उँ अश्विन्य स्वादा ॥ उँ यमाय स्वादा ॥ उँ वनशाय स्वादा ॥ उँ कृत्तिकाय स्वादा ॥ उँ अग्रस्वादा ॥ उँ नैमिष स्वादा ॥ उँ वा

यद्यस्वाहा ॥ श्रीगणेशाय स्वाहा ॥ उँव माहास्वाहा ॥ उँ पृथिव्या स्वाहा ॥ उँ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ यँ लो घं सुग ॥

यतिसवनमस्तु यं सर्वसेयगिदायि म ॥ १ ॥ हं त्वं कुरु द्रवर्षा वज्रसत्वात्मकापना ॥ १ ॥ कुरु वर्षा मदाधा

ना सकृधारी वरीवली ॥ दूर्ध्वा करिषरिहंति काधवजीनमाम्यहं ॥ २ ॥ मदाह्वना रुवा दवी दमवर्षेयराव

कृ ॥ विद्यावाह्नी मात्माना मायूरी प्रजामाम्यहं ॥ ३ ॥ वान्वका विसाला कीर्तकांशज नृतासिनी ॥ यमनागान् ॥ ४ ॥

क्षायदवी नमस्कृतगतागता वि ॥ ४ ॥ वेदूर्यो हुक निरोसा मयनात्सु कविशमा ॥ काका चैव दनी दवी नमामि क्षी

तवती ॥ ५ ॥ पापदहना ॥ कुरु मनूमादिनमस्कृतलमवसनमयार्थ कादिगं यच्च गत्सर्वमशुवाधेयूतगश्य

तिदक्षयामि ॥ अधूना सकृन्वदयमग्निसंस्मृतगत्तानामग्नधर्गं रीतसकृन्वजगत्तार्थं प्रजोधकमनूमाशं ॥ ॥

तदनकनं॥ मेरी कनू मदि गायका. वरुवम विहानां रावयन्॥ उँखरावगुचा ४ सर्वधर्मो खरावगुचा ३२॥ उँख
न्यातां हानकन खरावा सकारुं॥ यनँलँ वँसूकानका कनाचलं. दीपसमूदवक वादयनिवृत्तं॥ नँकानका सूर्यो मधुलंग
दूयनिज ४ विष्वाहानिकिनलू. वज्ररुमिवज्रयाकानं वज्रयञ्जन वज्रविहानं रावयन्॥ तदूयनिजुँकानकाग. वरुव
सं. वरुवानं. वरुसुत्रल ५ पुसक ५ सासिगं. रुदंगमनरावयन्॥ तस्माधायकानका विष्वाकं. तदूयनिजिगोविंदं
स्थायनिलं कानवीजवर्णं. णिगोसुत्रवक रावयन्॥ सवज्रविहयनिनखा विष्वांराजं. तस्यावज्रयर्थकननिषक्षुणिग
वरुमँखा॥ दकिगकसू. पृष्ठयीगा. वामदविनामूवराध ॥ दकिगपथमरुजनमूसावकं॥ दिगीयनवर्ज. एगी
यनसवं. वरुथेनखमं॥ वामपथमरुजनमूनीयाहं. दीगीयनणिगूलं. एगीयनधनं. वरुथेनयनहं॥ तस्य

५

मूर्ध्नि सर्वलंकालरुचिर्गंसिंहा नूतनं च वंरुगां महापति सनां रावथत् ॥ स चैव विष्णु न विन्धुं कानवीरु
 यत्रिनामहा ॥ महासाहस्यमर्दनी कृष्णवर्णं यिं गार्ध्वं कें नवकपात्रं रुगसवानूटं रुद्रकूटीदंशकनालवद
 ना ललिताक्षायन महारुजय कना कसमाक्रम्यमाना ॥ कुलकयूत्रमुकाहान नोयूनरुचिगा ॥ अश्रुशुभादक्षिण
 यथरुजनवनद दिगायनां कृष्ण रूपायन धनं चरुथेन खभ ॥ वामयथमरुजन रुक्मिणी वज्रयाक्षं दिगीयनय ४१
 ननु रूपायनधनु वरुथेन यथायत्रिखभनलं ॥ गस्यामूलमूर्त्वं कुरु दक्षिण (ह) वंरुं यधुयीत वामदक्षिण पति
 मूर्त्वं गिनं नानालंकानरुचिर्गंधात्रीनं महावलपनाक्रम्य नोदवेण च वंरुगां महासाहस्यमर्दनी रावथत् ॥
 ॥ दक्षिण (ह) विष्णु उयथायत्रिखभनलमधु मं कानवीरुयत्रिनामहा पाटिति महामायूनी पीतवर्णं सत्वेयर्थ

किनीं छिनगं छिमुखं अश्वानुहं अश्वरुजां नलमकुटीनीं सर्वलंकालरुषिणां दक्षिणयथमरुजुनवनदक्षिणीयननः
नक्षत्राद्यटं एगीयनवकं चतुर्थेनखजं ॥ वामरुजयथयागपदिरिक् दक्षिणीयनमयूरीहं एगीयनघटापदिविष्यः
वज्रं चतुर्थेननलधजं ॥ ॥ मूलमुखं पीतं दक्षिणरुं वामनकं ॥ एवंरुगां मलमायूरीरावयत् ॥ • ॥ यश्चिमविः
ध्वयभायत्रिसूर्यमधुलमध्वगां काववीजयनिनामजां मलमकानूसाविहीनकवर्धुद्वादशरुजां छिमुखां छिनगं ॥ मू
लमुखं नकं दक्षिणरुं वामलाहितं दक्षिणवानरुजुनधर्मचकमडां दक्षिणीयां समाधिमूला एगीयनवनदचतुर्थेनअ
रुययकभनवजं वषट्ठनखव ॥ वामएगीयनगर्जनीवजयाहं चतुर्थेनयथायत्रिकलहं यंचमननलरुगावषट्ठनधन
अर्द्धयथेकनीं नलमकुटीनीं सर्वलंकानरुषिणां नवथावनयन्नासावनोयूत्ररुषिणा कृकनालंरुगीं यतामलमकानूसा

मंजुवर्णांकदकिङ्करुजां॥प्रतावगमुविष्टयमसूर्यस्तुवज्जयर्थकिनीठिनगा॥नवथावनमल्लिगंविधिग
नलारनक्षंरावयग्॥॥पूर्वविदददवदहीयाविविधधवनर्त्तुर्विदहमागधर्वो॥ऊर्ध्वदीयनाक
ससहानानाविकटवद्वनरुक्कृष्णकुम्भ॥अयनगागयिनीथरुष्णककमसुका.नानावधालंकारधानि(व्याः
नागा॥॥रुक्कृन्नुयकनूया.नानावधानि(व्याकुवनाविशवयग्॥॥तद्वदिजसूयग्.पूर्वस्यादिहिः
सकाध्वनथसूर्येनकवर्त्तु॥सर्वकनायांनानाधनंदिङ्करुजां॥नस्यनोमदंसावूहासाम॥सद्यगनंकेनयांकमूदधः
न॥॥अग्नेयाकागानूहामंगानूलादिगवर्त्तु.सद्यकर्गनं.वागनमूहमालारिनथ.पधाना॥दकि(व्यापमानूहः
योगवर्त्तुसन्नानाधनावूध॥॥नेपथ्यांगजानूहवृहत्पणि.गानवर्त्तुनकमालाकमधुलूधना॥॥पश्चिमस्यां

[illegible]

नमस्तनस्तु पूर्वोवाद्य ॥ सनस्तु यास्तु नारुनावाद्य ॥ सिंहासनस्तु ॥ ६॥ मास्तु विगागोवा ॥ १ ॥ उरुनस्तु अवा
 दकस्तु धनिस्तु रुस्तु ॥ दस्तु यागा हागदवा ॥ पीनस्तु सनिता पूर्वस्तु ॥ पी० स्तु उरुस्तु ॥ दकस्तु हुक (गोवा
 नवति ॥ अस्तु नूदा विगागस्तु ॥ यगासनस्तु सनिता रनही ॥ १ ॥ यगास्तु विगागिदद्याश्च ननयनिध
 ना ॥ रुगास्तु लीयवस्तु गां विगावयस्तु ॥ ॥ गददिस्तु गीयवनयस्तु नदिस्तु ॥ गगस्तु यायां हुस्तु नवग
 नूदा पीगावस्तु विस्तु ॥ याम्या नदिवा नूदास्तु दस्तु रग्यम ॥ यगीयां मकनासनस्तु वस्तु र (जा नाग या
 हां वस्तु वनू ॥ उदिवां अस्तु नूदा पीगामस्तु हागदाधनं क्ववन ॥ विदिस्तु नवस्तु ॥ आ (ग्नयां हागान
 दानकस्तु वकमं नूधवाग्नि ॥ नैययां हागानूदाधुस्तु वस्तु रगकधना नाकसाधियतिनेमस्तु ॥ वायवा

२३

मृगवाहनः पञ्चधनावायूः ४॥ श्रीगङ्गायां वृषासनादिगा. शिखीलकया लघनं श्रीगङ्गा ॥ अस्य दामपा (ह्य) दंष्ट्रा नूत ४
पीता वरुणस्वस्तुका अकसु गृह कनयां रुगा अली. दंष्ट्र कर्म उल्लुधनं वक्ता ॥ नैषात्य वनूतया मध्वपीत वस्तुये
वनालं कानवगी. कनककं रससावसंधना ४॥ तस्या वामपा (ह्य) दंष्ट्रा म ४ कनकालं कानवान्. ह्यनरुट कधना वमस्ति
गा ४॥ पवंरुगा समलुलया नरावयम् ॥ ॥ गङ्गा अंगन्यास ४॥ उं आ ४ हूं स ४ स्वाहा ॥ पंचवक्ष्यां ॥ वृ. (ह्य) गथा ४४
४॥ मं द्या नथा ४॥ गं वक्ता ॥ जी. स्य (ह्य) ॥ गंगा ददयस्व ॥ पंचकानलहमीनामालोकधाम् रुद्रित्वा. लोनसत्वं समयस
त्वं. कीनतीवमिव समवसीह गंधदृष्ट ॥ ॥ अरिषकं यार्थयम् ॥ अरिषि अगुमां. सर्वगथा गगा न्नि ॥ य
था हि जातमाश्रयादि ४॥ अरिषका कनं. वेनायनादि मकूटं स्वसिनसि वज्रं दृष्ट ॥ उं पति सना स्वरावात्मका हं ॥

आलिंगनमूद्रायाञ्च कर्षणपूजायां लांघं रुद्रा राजननी सर्वसत्त्वानां सर्वलाकयकाविही ॥ यंचनकानमः स्यामि सर्वसः
त्वार्थसिद्धयर् ॥ नवगहनमसुर्यं सर्वसत्त्वपदायित ॥ यथां संभाषमायनसत्त्वानां जायते क्षुरं ॥ अष्टविंशतिनकना
सकसकदिशि स्मिता ॥ तानमस्यामि वेष्टुः सर्वला ॥ यथां रय ॥ लाकपालं नमस्यामि, दिग्बिदिग्बवास्तुगा ॥ यथां नः
काविधानतः सत्त्वामुसत्त्व सर्वदा ॥ ॥ गगाललाटकं हस्तं हिरण्यकाष्ठिगान् ॥ ॐ अ१ हूं कावाननिवि कथयन्
॥ गियावर्गं यं रावयन् ॥ गगनायिता रुद्रा रुद्रा किं नक्षत्रमालिकं या रुद्रा, पूर्वकागगहस्तायितं, समयसत्त्वमधु
लं, छिद्यं हनसत्त्वमधुलमवलाक ॥ अर्घोदि पूजायं लांघं रुद्रा ॥ जाय ॥ पूर्ववर्ग अर्घोदि ॥ पूजायं लांघं रुद्रा ॥
॥ गगावलिरावता, लखगसं ॥ वलिराहुं हन्यतां रावयन् ॥ ॥ यं कावर्गवो यमधुलं, वनत्यकाकां किं रं ॥

[illegible]

विद्या. गथे वां मृगकुलुली. जयवाजिगामदादवी. कात्रकली मदावला. गथाधन्यामदा रागा. पत्रकुलुलि न
वव. ॥ पृथ्वदंती मदिबूठा. सुवर्णकली वयिं गला. ॥ मदा रजा गथा दवी. धन्या वविदूमा लानि. ॥ वाकसक
ऊगाचे व. वृद्धा ॥ दिगी कनाय कनायिका. ॥ ॥ गयथा. ॥ कालिकमालि. कुक्का छि. हदिनी. कमलादि सा
विगी सुनिक छि. थी मरि सुनि विं गल. ॥ लं वयल थ काल पा छि कल. ॥ दनि. ॥ यमदूगी यमला क सि छे वं. ॥
हृगस नि प्र ति छ मं. ॥ गन्ध पृथ धूपं वलि दा स्या मि. न का क नू म स सर्व स लानां व. ॥ सर्व रु था प द व स्य ॥ जी वं दु
व र्षं ग रं य छ रु सु व दा ग रं. ॥ सि ध रु म रु प दा ॥ दान प रि जू मू क स्य यो छं क नू सा दा. ॥ पू पं लां चं सु. ॥ ॥
कल स र्वं म र. धू नि आ दि यू जा. ॥ द व म छु ल पू जा. ॥ म छु ल थिल. स्वां ग न. ॥ ग र द व जू नि वी उ. स र्वं ग य. ॥

विधिष्वं पूजा मलुलंद वं त व ग दं ध ति पूजा ॥ ॥ प गि स न या न ज गायू न त द न ज ऊं स्ना न गायू धूप क र्प व ॥
विग णी ख ण ॥ रु ल पी यं गु ॥ म धि र व न व ॥ दी प ध ल ॥ द क णा डा हा या व क ॥ उ गु ति दू द ॥ अ र्घ्य द न ॥ १ ॥ म स सा स ॥
व म र्द निया ॥ न ज क रु न त नी ल ॥ धूप क रु नी ॥ वि ग डा सि गु नि ॥ ऊ ऊ म स्ना न सा क ॥ रु ल गु म म सी ॥ उ गु ति वा क ॥ म धि
व य ना धि ॥ दी प हा यि ता ॥ हा म ल वि कं ॥ द क णा डा हा वि वं ऊ ॥ अ र्घ्य नी ल ॥ २ ॥ म स सा मा यू नी या ॥ न ज य था ॥ न त प
थ ना ग ॥ धूप यं व गंध ॥ वि रु कं क म स्ना त्थ या व रु ल ॥ कि म सी ॥ उ गु ति ॥ क रु ध नि ॥ म धि ख लू ति ॥ दी प य श्री डा यी का ॥
वि कं ॥ द क णा डा हा वि न त ॥ अ र्घ्य ॥ पू थ ना ग ॥ ३ ॥ गी त व र्गिया न ज वा दू ॥ धूप णी व ॥ वि ग वू डा ॥ ऊ ऊं स्ना न उ भ वं
न त म ल ॥ रु ल ग डा सि ॥ उ गु ति वा क ॥ म धि ना वी ॥ अ र्घ्य म न ॥ ४ ॥ म स म क नू सा न जी या ॥ न ज का दू ॥ धूप क ण नी च

का
प्र

ननकवदन ॥ जंखानका ॥ नलननगुनि ॥ हलकालजंवी ॥ गुनि ॥ साधन ॥ सधिमथ ॥ दीयनक ॥ यकाविकं ॥ ददक्ष
असा ॥ विंयम ॥ अर्धककंदन ॥ ७ ॥ धनसैमं ॥ अर्धथन ॥ सिजनया ॥ ॥ आदिसुया ॥ नजका ॥ धूपकंदन
विगकं ॥ कम ॥ जंखानका ॥ गुनि ॥ कालजा ॥ हलमकसी ॥ मधि ॥ स्वायाय ॥ दीयलाविकं ॥ ददक्ष ॥ विंसावासा ॥ अ
र्ध ॥ सिजल ॥ वीदिसां ॥ १ ॥ सामया ॥ नज ॥ गुयू ॥ धूपकंदन ॥ विगकमून ॥ जंखानगुयू ॥ गुनि ॥ धनि ॥ हलमक ॥ ४
सी ॥ सधिमथ ॥ अर्धया ॥ जंखानका ॥ दीयगुयू ॥ साधन ॥ विदिसा ॥ यूसाम ॥ अर्धम ॥ सिगदय ॥ निहां ॥ ददक्ष ॥ हां ॥ २
॥ असा ॥ नया ॥ नज ॥ काडं ॥ धूपघूनी ॥ विग ॥ नकवदन ॥ जंखानका ॥ काडं ॥ गुनि ॥ वाक ॥ हलनां ॥ सि ॥ सधिस ॥ सधि ॥ अर्धया
॥ सिजलया ॥ दीयका ॥ डिकाविकं ॥ अर्धपूल ॥ गुदयनि ॥ थूसा ॥ ददक्ष ॥ धूसा ॥ ३ ॥ वृधया ॥ नज ॥ पीर ॥ धूपकं ॥

म. विर. गोवाचन. ऊऊं स्वां पीत. सुगुणि धन साधन. रुल. ममसि. मधि मथ. अर्घया उलया. दीय. काविकं वीदिः
का. गदयगिल. अर्घलु. दक्षाल. ४ ॥ वृहस्पतिया. नऊ. पीत. धूप. घृतमधू. विर. पंचगंध. ऊऊं स्वां पीत.
सुगुणि. धनिवाकू. रुल. तडा. सि. मधि. रि. नि. दीय. धन. वीदि. ग. का. गदयगिल. अर्घया उल. ॥ दक्षाल. कायनं. ॥
५ ॥ लुकया. नऊ. दुयू. धूप. नील. दीय. धन. ॥ अर्घया उ. डा. सा. या. वीदि. कयगुलि. गदयगि. सन. ॥ दक्षाल. सन.
नल. मगि. ॥ ६ ॥ लानि. श्र. नया. नऊ. नील. ॥ धूप. गंध. वस. ॥ विर. अगुलि. ॥ ऊऊं स्वां. दाकू. सुगुणि. गुठ. मांस. रुल. गुम.
मसि. साम. मे. धि. दीय. साम. विकं. अर्घया. नया. गु. वीदि. मा. गदयगि. कयगुसा. दक्षि. धां. कयगुसां. ॥ ॥ ॥ ना.
दूया. नऊ. नील. धूप. चान. दाग. विर. सकशां. ऊऊं. स्वां. दाकू. ॥ स. ॥ सुगुणि. ना. का. रुल. क्रि. नसि. ॥ गवल. मधि. ॥ अर्घ.

क
क
ड

नाडात॥ अर्घ्यपात्रफल॥ वीदिचात॥ गृहपतिस्वर्ग॥ दक्षिणा॥ वा॥ स्वर्ग॥ ६ ॥ कुरुया॥ नरु॥ धूम॥ धूपशीलस्त्रि
तकसुनि॥ ऊर्जस्वा॥ नाता॥ अर्गुनि॥ मृकसा॥ घन॥ रुल॥ धाव॥ चयना॥ मधि॥ दीपसकता॥ विकं॥ अर्घ्यकन॥ अर्घ्यपात्र॥ सीक
नया॥ वीदि॥ कल॥ गृहपति॥ धानस॥ दक्षिणा॥ धानसं॥ ७ ॥ अर्गुया॥ नरु॥ धूप॥ धूपशीलस्त्रि॥ विरा॥ कर्णूल॥ ऊर्जस्वा
गुय॥ अर्गुनि॥ दूध॥ घन॥ रुल॥ चाकसी॥ मधि॥ शायु॥ सामल॥ अर्क॥ गृध॥ घन॥ मधि॥ अर्घ्यमणि॥ अर्घ्यपात्र॥ डासाया॥ ८
दीप॥ शायु॥ सामचिकं॥ वीदि॥ अर्क॥ गृहपति॥ सिंहासं॥ दक्षिणा॥ सिंहासं॥ १० ॥ अर्गुनि॥ नवगृहपूजा॥ दानविधिगुरुं

४६

विमंदिनयुग्यं वावदुर्थवासा विमंसा विमंस्त्रुक्तं नयकया का कृत्तन विडंरु वनि॥ ॥ उं ऊं औं हूं व क्रूर
हूं रु द स्वा हा ॥ छि ब स य ना रि जि था न जा य सर्व भा ग व का ॥ ॥ उं हूं ष य वि ष रं वा ष य वि स नं वा वो ल्यं डो वि
स सा व स कि स ल रु द धाल प पि व क ला स जा व वि ष डि ० क ला स हा हूं ॥ वि ष रु न व ॥ ॥ क सु मा धी रु नि डा रि
मू ना हो ल व म्प क व रा क चू न मू र्तं व सर्वा ष धी क म्प या न ॥ ॥ उं रें लें हूं ॥ अ रु स्य म कु ल अ ष य जा य य स्य ग रु
नि क्रिय रु उ चा ट नं रु व नि रु रु क ठां ॥ ॥ उं न मा का म द वा य व णा क णा सा रा ग्यं म यि दं ष यि मन मा रु नी अ म्
कं रु

५०

आध्यात्मिक	
३१५	
ASIA BRUNNEN	